PDF Compressor Free Version

विश्वास है

2016

www.vishwasindia.org

PDF Compressor Free Version

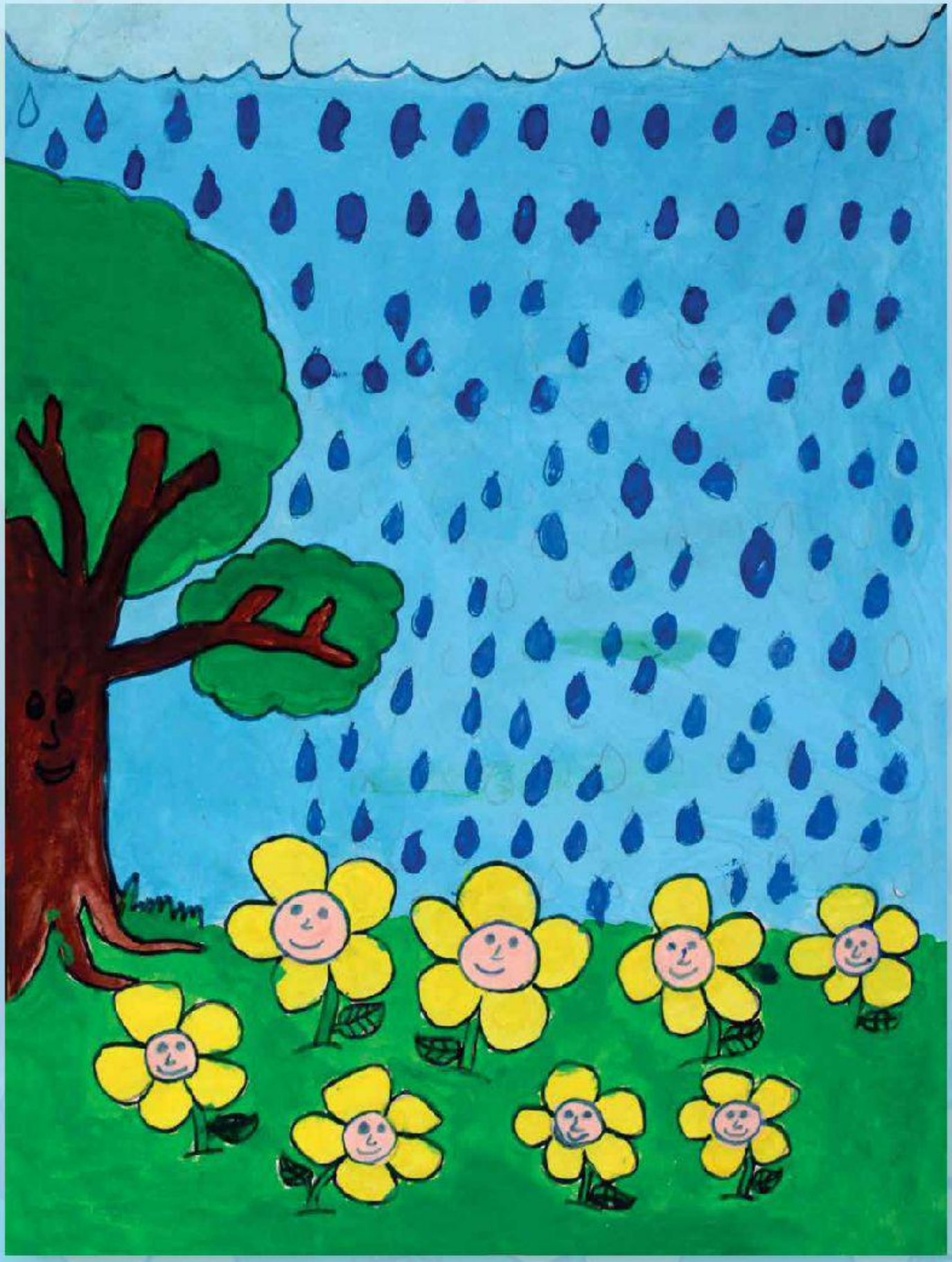

Drawing by : Birajbhan (VII)

PDF Compressor Free Version

विश्वास

vishwas

Vision for Health Welfare and Special Needs

PDF Compressor Free Version

विश्वास है

कह दो अँधेरों से चल पड़े हैं हम
छप छप छपाक रोशन हैं ये क़दम
हैं रोशनी से चेहरे धुले हुए
इन बाज़ुओं में विश्वास का है दम
बोते हैं सवेरे, विश्वास है
तोड़ेंगे अँधेरे, विश्वास है
हम कर्म की मुट्ठी हैं, विश्वास है
आशाओं की मिट्टी हैं, विश्वास है
करने से ही होगा है, विश्वास है
कोशिश में ही सोना है, विश्वास है
विश्वास है, विश्वास है, हमको उजालों की आस है
हैं आँधियाँ मालूम है, ज़िद्दी मगर विश्वास है
कह दो डगर से मुश्किल बिछाए वो
सूरज से कह दो आए जलाए वो
हम संग हैं तो मंज़िल एकदम आएगी
सच्ची लगन से वो छुप न पाएगी
मन में कभी न विश्वास होगा कम
कह दो अँधेरों से चल पड़े हैं हम
कई जीवन कबसे इन्तज़ार में
कई बचपन देखो हैं कतार में
कई गीत लुटाने हैं हमको
नए ख्वाब सजाने हैं हमको
होने न देंगे एक आँख को भी नम
कह दो अँधेरों से चल पड़े हैं हम
खुल जाएँ छूए और ज्ञान बह चले
मिट जाए प्यास छलके वो सिलसिले
हमको मिला जो तो बाँट दें चलो
अज्ञान की फसल छाँट दें चलो
विश्वास की चमक चम चमाक चम
कह दो अँधेरों से चल पड़े हैं हम
छप छप छपाक रोशन हैं ये क़दम

प्रसून जोशी

PDF Compressor Free Version

विश्वास मात्र एक संस्था नहीं है,यह एक सपना है,एक उम्मीद है,एक संघर्ष है,एक ईमानदार कोशिश है ,एक उजाला बाँटने की,एक सवेरा लाने की। मुझे हार्दिक ख़ुशी है कि मुझे नीलम जी ने किसी रूप में इस संस्था से जोड़ा और मैंने विश्वास गीत लिखा। विश्वास की रीढ़ इस संस्था से जुड़े शिक्षक और निस्वार्थ भाव से कर्म करने वाले कार्यकर्ता हैं। पिछले वर्ष मुझे विश्वास के वार्षिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिला, जहाँ मुझे प्रेम, कर्तव्य, ज्ञान और प्रतिभा का अनोखा संगम देखने को मिला जो मेरी स्मृति में सदा ज़िंदा रहेगा। संस्थाएँ कई बनती हैं योजनाएँ कई बनती हैं पर बहुत कम कर पाते हैं सतत प्रयास, बहुत कम स्वप्न होते हैं जो यथार्थ के सीने पर नयी सोच के पुष्प खिलाते हैं

नीलम जी के प्रयास भविष्य में और भी गति पाएँगे और नयी ऊँचाइयों को छुएँगे....मुझे विश्वास है

PDF Compressor Free Version

इस वर्ष विश्वास अपने संघर्षपूर्ण दस साल सफलतापूर्वक पूरे कर चुका है। इस दौरान बहुत योजनाएँ बनाई गईं, बहुत सपने देखे गए। जैसे-जैसे सही-सही मौका माहौल मिला वैसे-वैसे इन्हें बहुत मेहनत से कार्यान्वित किया गया। इसमें से एक बहुत महत्वपूर्ण कदम इस साल भी उठाया जा रहा है। विश्वास की पहली पत्रिका " विश्वास है " अब शुरू की जा रही है। मुझे यह कहने में बेहद प्रसन्नता और गर्व महसूस हो रहा है कि अब हमारे बच्चों का आत्मविश्वास इतना बढ़ चुका है कि वह अपनी भावनाओं को अलग-अलग माध्यम में प्रकट कर पा रहे हैं। मेरी शुभकामनाएँ और प्यार आप सभी के साथ है। मुझे आशा है कि विश्वास की इस पहल से हमारे बच्चों को अपनी सोच एवं विचारों की अभिव्यक्ति करने में और मदद मिलेगी।

नीलम जॉली
चेयरपर्सन

PDF Compressor Free Version

इन कुछ सालो में विश्वास के सफर को शब्दों और खूबसूरत चित्रण के माध्यम से दर्शा कर आप सबके सामने रखने की एक छोटी पहल की है। उम्मीद है आपको भी उतना ही मज़ा आएगा इसको पढ़ने में जितना मज़ा हमें आया इसके संकलन में। यह सफर है एक बगिया का जिसमे भांति भांति के फूल पत्ते और पौधे हैं, तथा जीवन का हर रंग है। एक तरफ रंग है उपलब्धि का, आशा है सफलता की, वहीं दुःख है, खो जाने का और डर है असफलता का। यह रंग और रचनात्मकता हमारे जीवन में उत्साह व प्रेरणा का स्तोत्र बनी रहे, साथ ही हमे यह विनम्र एहसास भी रहे कि यह जीवन समावेशन, विविधता, सहनशीलता, आत्मनिर्भरता के साथ साथ परस्पर निर्भरता का है। बहुत बहुत धन्यवाद उन सब शिक्षकों का जो साल दर साल अपने प्यार से इस बगिया के फूलों को सींचतीं हैं। मेरी ओर से हम सभी को इस शुरुआत की हार्दिक शुभकामनाएं।

गीता चतुर्वेदी

PDF Compressor Free Version

शिक्षा केवल हमें ज्ञान या कुछ कौशल ही नहीं सिखाती, वह हमारे विचारों का विस्तार करती हैं, उन्हें पंख देती है और अंतत: हमें सोचने का दृष्टिकोण देती है । इसकी शुरूआत भी स्कूल के आरंभिक वर्षों में ही हो जाती है आज अपने बच्चों के इसी दृष्टिकोण को बाँटने में मुझे बहुत सुखद अनुभूति हो रही है । बच्चों ने अपनी सोच कहानियों तथा चित्रों के माध्यम से समझाने की कोशिश की है । चलें, हम सभी उनकी सोच के पंखों को उड़ान दें । यह उनकी शुरूआत है और हम सब यही चाहतें है कि वह निर्भय होकर अपने विचार दुनिया तक पहुंचा सकें । मैं उन सभी लोगों का धन्यवाद करना चाहूँगी जिनके प्रयास से यह संभव हो सका । हम यह भी कोशिश करेंगें कि आने वाले वर्षों में हमारे बच्चे और भी आगे बढ़ें और हम आपके साथ और भी रोमांचक अनुभव बाँट सकें । आइए, अब बच्चों की दुनिया में चलें...

प्रज्ञा सिंह

PDF Compressor Free Version

Editorial Team

Seated (Left to right) – Chandrashekhar , Kshitij , Varsha , Draupadi , Anjali
Standing (left to right) – Rahul , Manish , Ravi , Brajesh , Ishank

PDF Compressor Free Version

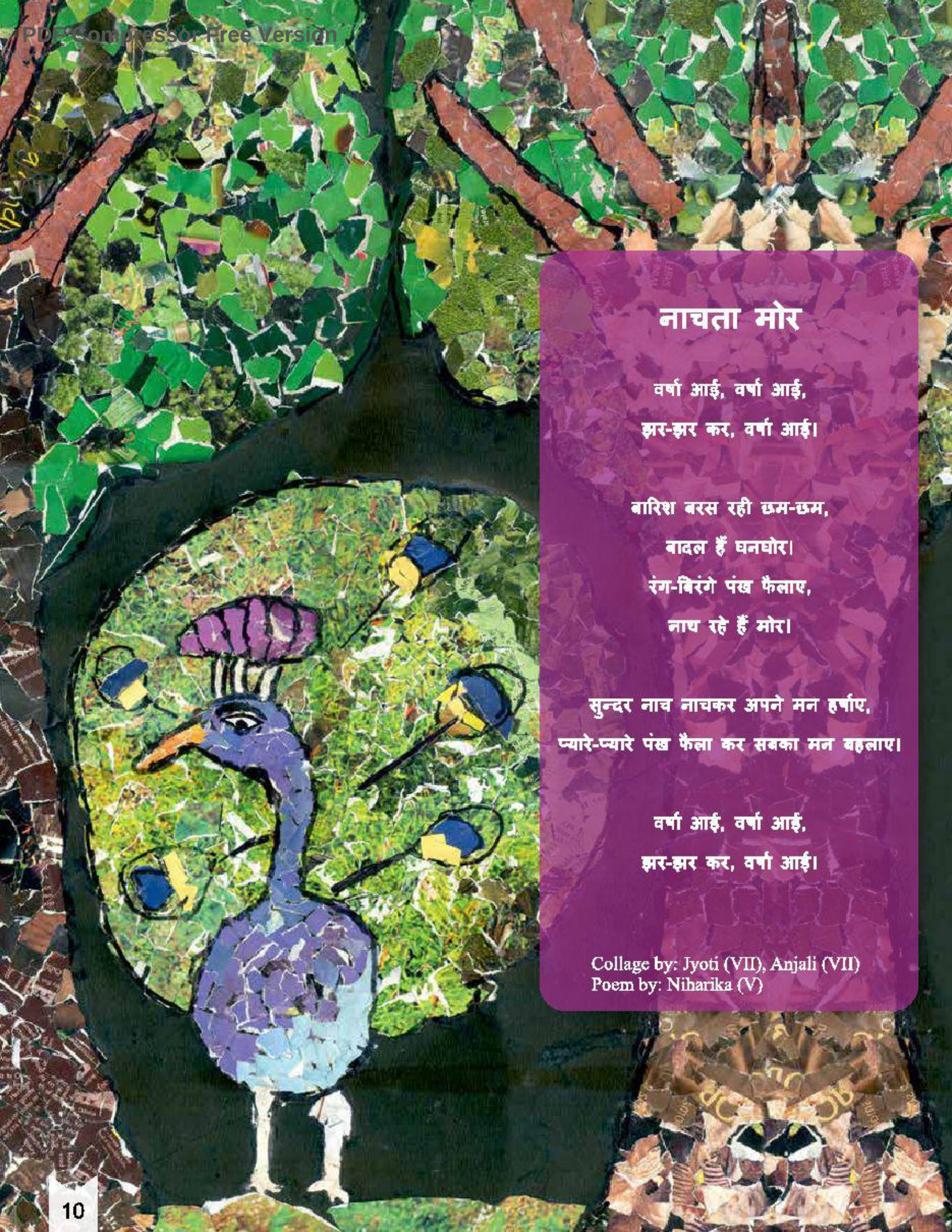

नाचता मोर

वर्षा आई, वर्षा आई,
झर-झर कर, वर्षा आई।

बारिश बरस रही छम-छम,
बादल हैं घनघोर।
रंग-बिरंगे पंख फैलाए,
नाच रहे हैं मोर।

सुन्दर नाच नाचकर अपने मन हर्षाए,
प्यारे-प्यारे पंख फैला कर सबका मन बहलाए।

वर्षा आई, वर्षा आई,
झर-झर कर, वर्षा आई।

Collage by: Jyoti (VII), Anjali (VII)
Poem by: Niharika (V)

PDF Compressor Free Version

दिवाली

दिवाली तो हम मनाएँगे, पर पटाखे न जलाएँगे।
चारों तरफ खुशहाली हम फैलाएँगे, पर पटाखे न जलाएँगे।
त्योहार है ये रोशनी का, दिये हम जलाएँगे।
चारों तरफ दियों की, रौशनी हम फैलाएँगे।

हो प्रदूषण रहित दिवाली, फैले चारों ओर खुशहाली।
न कोई दुखी न परेशान, सब के चहरे पर झलके मुस्कान।
दिवाली तो हम मनाएँगे, पर पटाखे न जलाएँगे।
चारों तरफ खुशहाली हम फैलाएँगे, पर पटाखे न जलाएँगे।

गले मिलकर बाटे खुशियाँ, पटाखों की क्या ज़रूरत है।
बिन पटाखों के ही, दिवाली की रात खूबसूरत है।
दिवाली तो हम मनाएँगे, पर पटाखे न जलाएँगे।
चारों तरफ खुशहाली हम फैलाएँगे, पर पटाखे न जलाएँगे।

क्यों दुखी करे लोगों को, पटाखों की आवाज़ से
आओ खुश रखे लोगों को, दिवाली के त्योहार पे
दिवाली तो हम मनाएँगे, पर पटाखे न जलाएँगे।
चारों तरफ खुशहाली हम फैलाएँगे, पर पटाखे न जलाएँगे।

Poem by: Rahul (VIII)

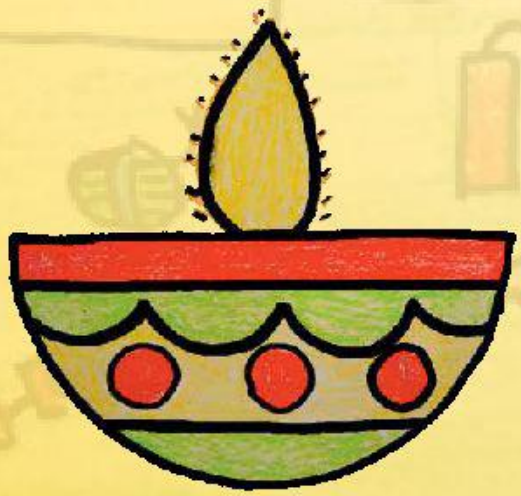

PDF Compressor Free Version

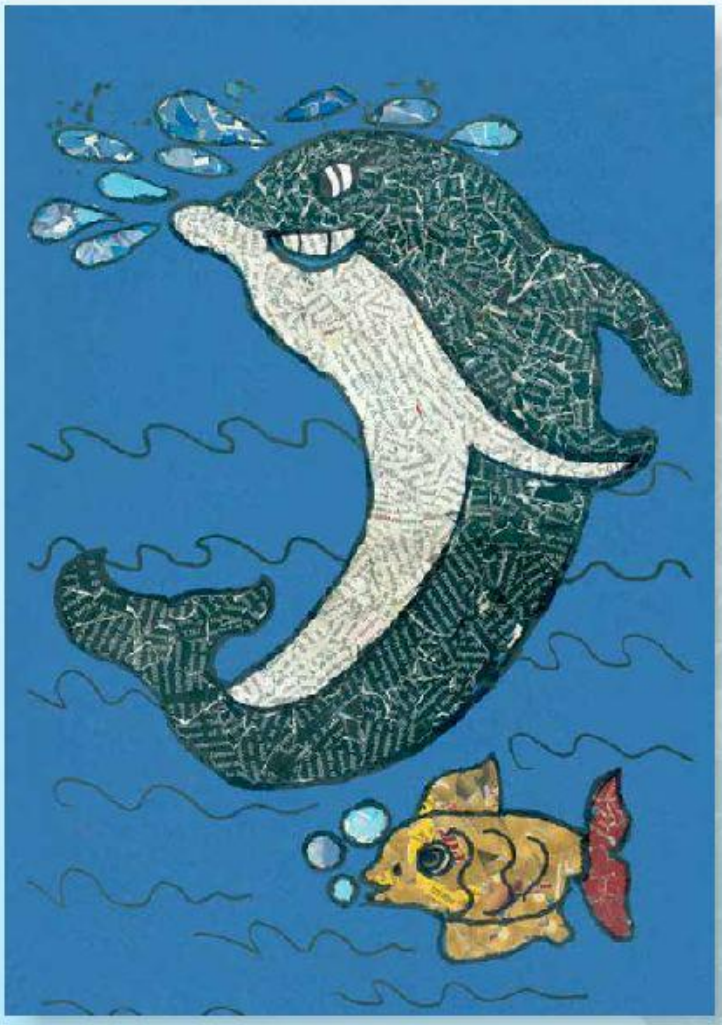

Collage by : Rahul (VI) & Birajbhan (VII)

जल ही जीवन

एक बार की बात है एक बड़े तालाब में रंग-बिरंगी सुन्दर-सुन्दर मछलियाँ रहती थीं। सुन्दर-सुन्दर रंगों के कारण प्रत्येक व्यक्ति उनकी तरफ आकर्षित होता था। विवेक नामक लड़का हर रोज तालाब पर आता और दो चार मछलियाँ पानी से बाहर निकालकर डाल देता। जब मछलियाँ बिना पानी के तड़पती तो उसे बड़ा आनंद आता। थोड़ी देर उन्हें तड़पता देखकर वह उन्हें वापिस पानी में डाल देता और अपने घर चला जाता। एक दिन गर्मियों की छुट्टियों में वह दोपहर के समय ही तालाब कि ओर चल दिया। सूरज की तपा देने वाली गर्मी से उसे प्यास लग आई। बिना पानी के उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह भी मछलियों की भाँति तड़प रहा हो। आज उसे अहसास हो गया था कि बिना पानी के जीवन कितना मुश्किल है। अब वह तालाब पर रोज़ आता लेकिन मछलियों को परेशान नहीं करता बल्कि पानी में उनकी उछल कूद देखता रहता। इसी तरह समय बीतता गया। एक दिन उसने देखा की किनारे पर पड़ी सुनहरी मछली को मछुआरा प्यार से सहला रहा है। विवेक मछुआरे के पास गया और उसने सुनहरी मछली को सहलाने का कारण पूछा। मछुआरे ने उत्तर दिया की किनारे पर तड़पती मछली को देखकर उसे दया आ गई और उसने उसे गोद में उठा लिया। उसकी दया भावना को देखकर विवेक को बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिस मछली को बाजार में बेचकर उसे अच्छे पैसे मिल सकते थे। वह मछुआरा उसे बेचने के बजाय वापिस तालाब में छोड़ने की सोच रहा था। उसकी इस दयालुता को देखकर विवेक का मन प्रफुल्लित हो गया। उसने महसूस किया कि आज भी अच्छे लोगों की कमी नहीं है।

Story by : Bobby (VIII)

PDF Compressor Free Version

तोते का जन्मदिन

एक बगीचा था। बगीचे में फलों के बहुत से वृक्ष थे। तरह-तरह के फल लगे थे जैसे- आम, अनार, अमरुद बेर। उन पेड़ों पर पक्षियों के घोंसले थे। वे पेड़ों के फल खाते और मीठा गाते। पेड़ के मोटे तने में एक बड़ा छेद था। छेद के भीतर तोता और मैना का एक जोड़ा अपने कोटर में रहता था। बसंत ऋतु बीत चुकी थी और गर्मी आ गई थी। आम का पेड़ खट्टे मीठे आमों से भर गया था। तोता और मैना अपने कोटर में बैठे बातें कर रहे थे। तोते ने मैना से कहा- "आजकल मौसम बहुत अच्छा है। पेड़ों पर फल भी लगे हैं क्यों न मेरा जन्मदिन मनाया जाए?" मैना ने तुरंत हाँ कर दी। मैना बोली- "हाँ-हाँ क्यों नहीं, सभी मित्र आएगें मीठे-मीठे फल खाएंगे, अच्छी दावत हो जाएगी।" तोता और मैना ने अपने सभी मित्रों को निमन्त्रण दिया। निमन्त्रण पाकर कोयल, चिड़िया, गिलहरी, गौरैय्या, मोर आदि सभी दोस्त समय पर पहुँच गए। गिलहरी ने खीर बनाई, तोते ने केक बनाया। मैना ने कच्चे आम की चटनी बनाई। सब तैयारियां पूरी हो चुकी थीं और तोता केक काटने की लिए तैयार था। तभी उन्होंने देखा कि आम के वृक्ष की ऊँची डाल पर एक कौवा बैठा है और बार-बार झांककर देख रहा है। तोते ने उसे भी बुला लिया। तोते ने केक काटा सभी ने तालियां बजाई और गाना गाया और खाना खाकर अपने-अपने घर चले गए।

Collage by : Ragini (VI) & Dropadi (VII)
Story by : Abhishek Kumar (V)

PDF Compressor Free Version

सतरंगी आसमान

खिलता सूरज, हँसता आसमान,
जगाता मन में उमंग और अरमान।

सुन्दर दृश्य ये आसमान का,
हुआ बारिश के बाद।
नीले स्वच्छ जल में झाँकते हैं,
इन्द्रधनुष के रंग ये सात।

लाल, नारंगी, पीला, हरा, बैंगनी, नीला
देखकर रंग ये हम बच्चे मुस्कुराएँ।
निर्मल जल में नाव तैरती,
है सरपट जाए।

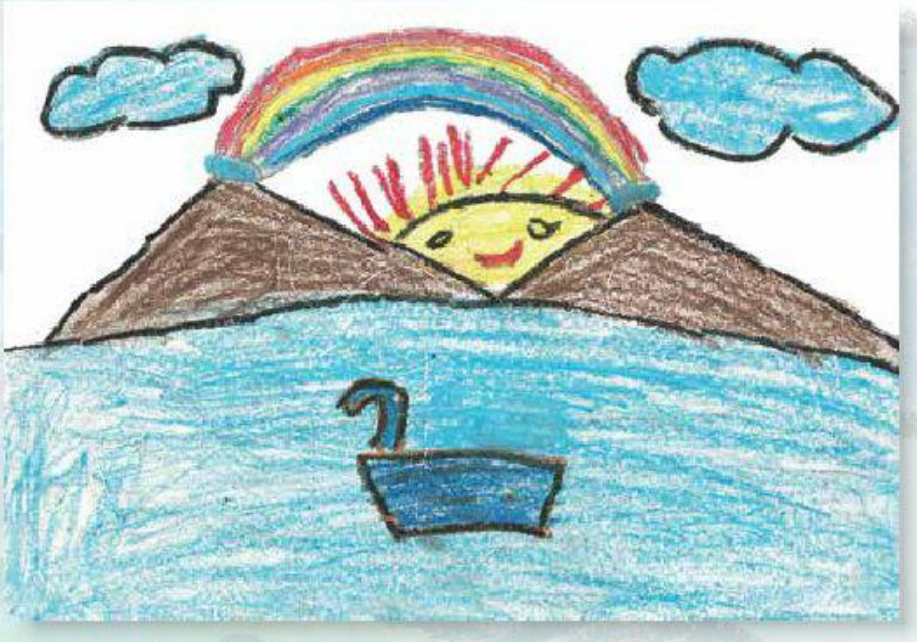

Drawing & Poem by : Shagun (I)

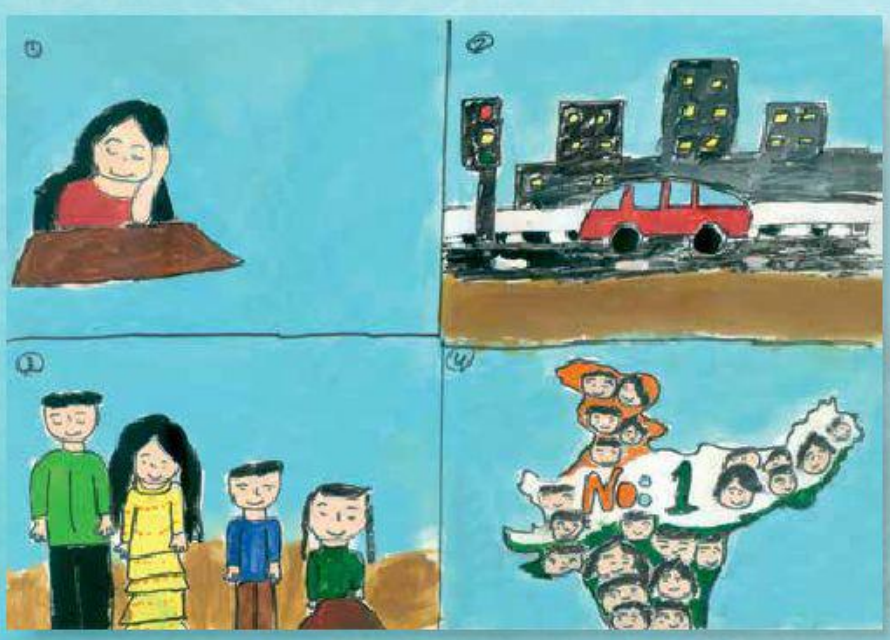

Drawing by : Anjali Rajak (VII)
Poem by : Nisha Kumari Das (IV)

अच्छे बच्चे

अच्छे बच्चे बनना हमको अच्छा लगता है,
दुखियों की सेवा करना हमको अच्छा लगता है।
न कोई ऊँचा, न कोई नीचा,
सारा भारत एक बगीचा।
फूलों जैसा खिलना हमको,
जीवन में सेवा करना अच्छा लगता है।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,
आपस में सब भाई-भाई।
मिल-जुलकर रहना हमको अच्छा लगता है,
अच्छे बच्चे बनना हमको अच्छा लगता है।

PDF Compressor Free Version

परी

सोनम नाम की एक परी आसमान में रहती थी। उसे जादू करना आता था। जादू करना उसे बहुत ही पसंद था। वह कभी किसी को चूहा तो किसी को बिल्ली बना देती। सब उससे बहुत दुखी थे। सोनम परी की आदत के बारे में एक दिन सबने मिलकर बड़ी परी को बताया। बड़ी परी को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने सोनम परी को चूहा बना दिया। अब सोनम परी चूहा बन गई और हमेशा वही बनकर रह गई।

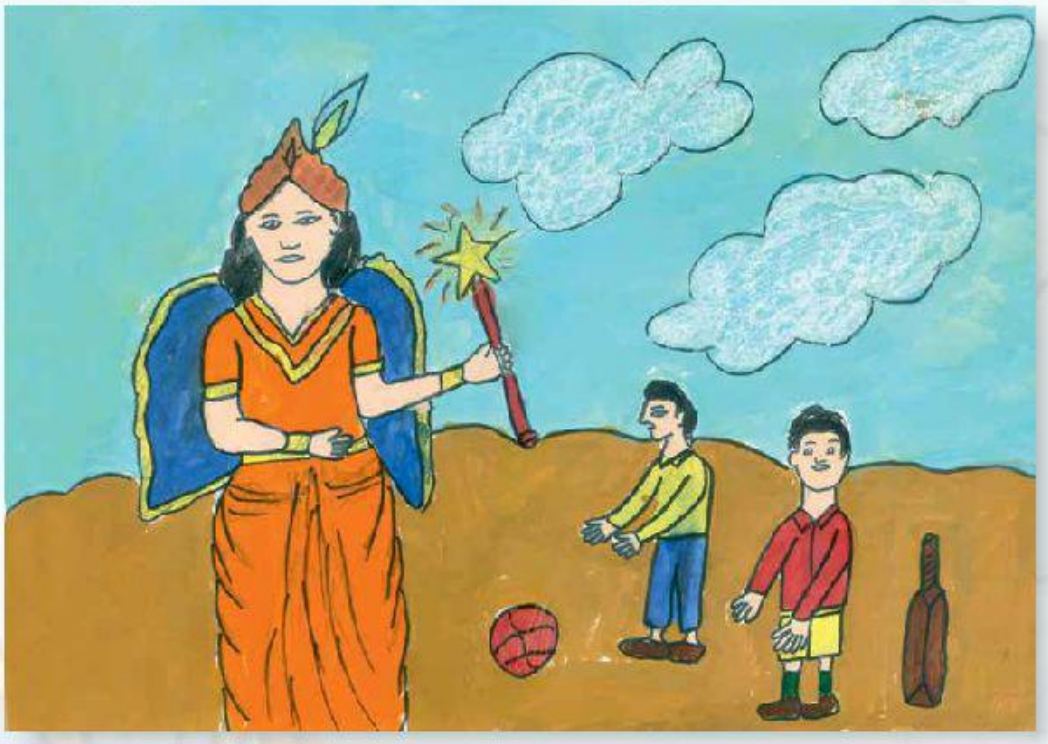

Drawing & Story by : Rohit (VI), Sonam (II) & Pinky (II)

Drawing by : Naman (Nursery)
Poem by : Shivam (II), Sanjana (II) & Kapil (II)

वर्षा

बारिश का समय था। जंगल में सभी जानवर बहुत खुश थे। एक दिन बहुत ज़ोर से बारिश हुई। मोर को तो यह मौसम बहुत ही पसंद था। वह अपने पंख फैलाकर मज़े से बहुत देर तक नाचा। उसने सोचा कि यह मौसम कितना अच्छा है। क्यों न मैं आज अपनी दोस्त निक्की बत्तख से मिल आऊँ। वह कूदते-कूदते निक्की बत्तख के पास पहुँचा। उसने उसे अपने दिन के बारे में बताया और दोनों बाद में साथ घूमने गए।

PDF Compressor Free Version

Drawing by : Jasmin (Nursery)

चिड़िया ने बहुत सारे बच्चे दिए।

अब बच्चे बड़े हो गए हैं।

चिड़िया अब अपने बच्चों को उड़ना सिखा रही है।

Drawing by : Sunny (Nursery)

शाम का समय है।

मैं पार्क में खेलने जा रहा हूँ।

पार्क के रास्ते में एक बड़ी सड़क है।

जिस पर लाल बत्ती भी है।

मैं छुट्टी के दिन बगीचा घूमने गई।

बगीचे में सेब का पेड़ था।

जिस पर बड़े-बड़े सेब लटक रहे थे।

उसी पेड़ पर एक तोता भी बैठा था।

मुझे देख कर वह उड़ गया।

उसके उड़ते ही एक तितली भी

आकर फलों पर बैठने लगी।

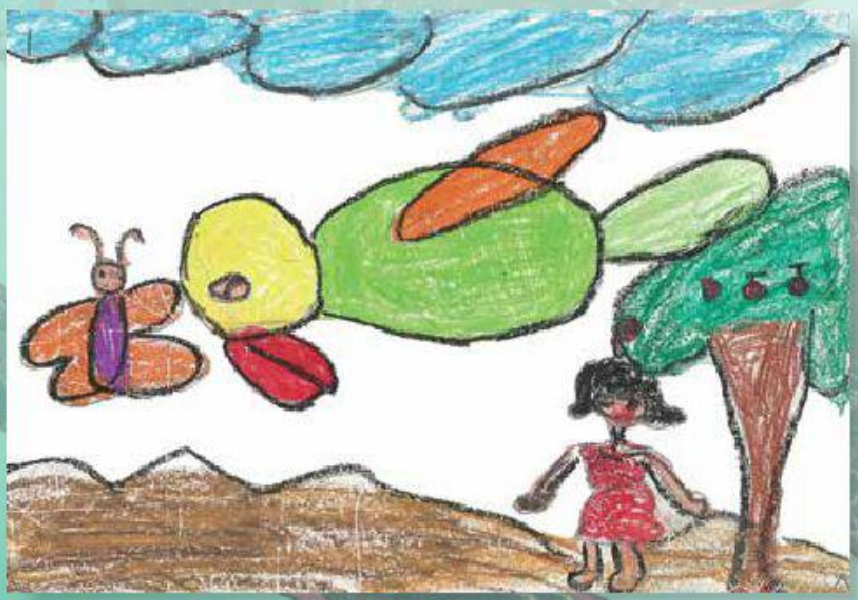

Drawing by : Kajal (Nursery)

PDF Compressor Free Version

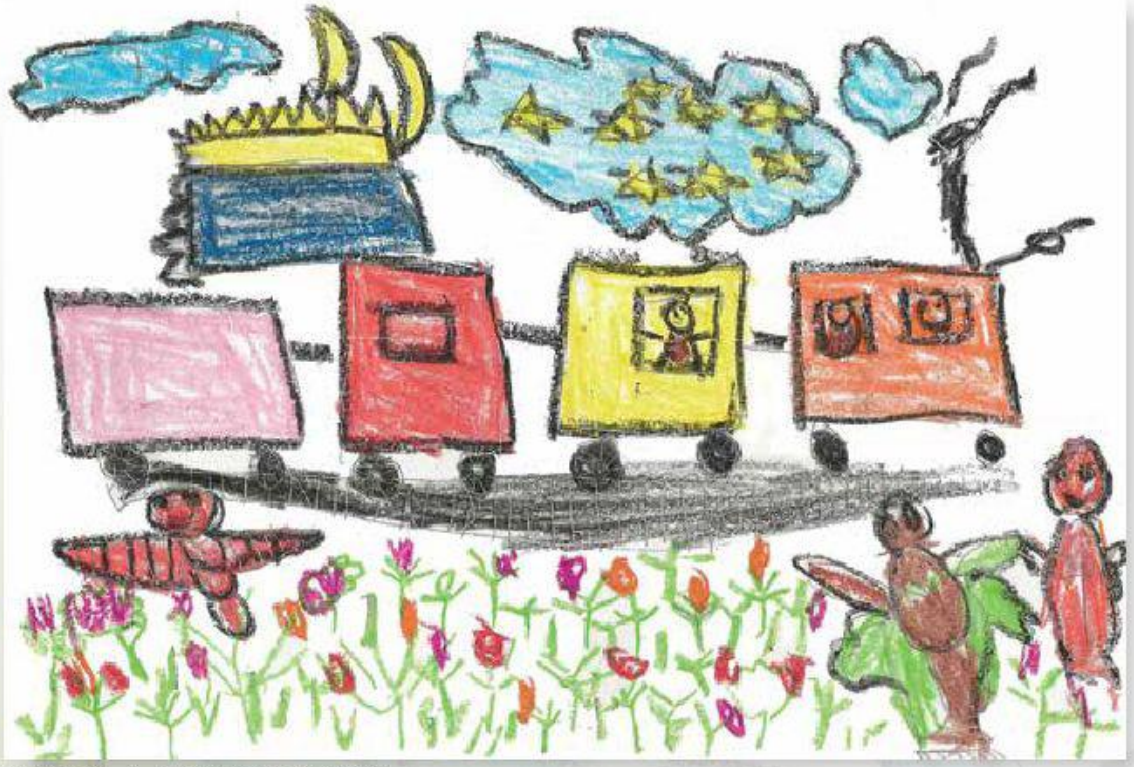

Drawing & Poem by : Asif (I)

रेलगाड़ी की सैर

इस बार जब गर्मियों की छुट्टियां हुईं तो मैं अपने परिवार के साथ गाँव में गया। हम सब दिल्ली से गाँव तक रेलगाड़ी में गए। मैं बहुत खुश था क्योंकि रेलगाड़ी से बाहर के नज़ारे बहुत सुन्दर लग रहे थे। एक बगीचे में सुन्दर-सुन्दर फूल खिले थे। उनके ऊपर रंग बिरंगी तितलियाँ मंडरा रहीं थीं। धीरे-धीरे रात होने लगी और रात का नज़ारा भी सुन्दर था। चाँद और तारों से भरा आसमान बेहद सुन्दर लग रहा था।

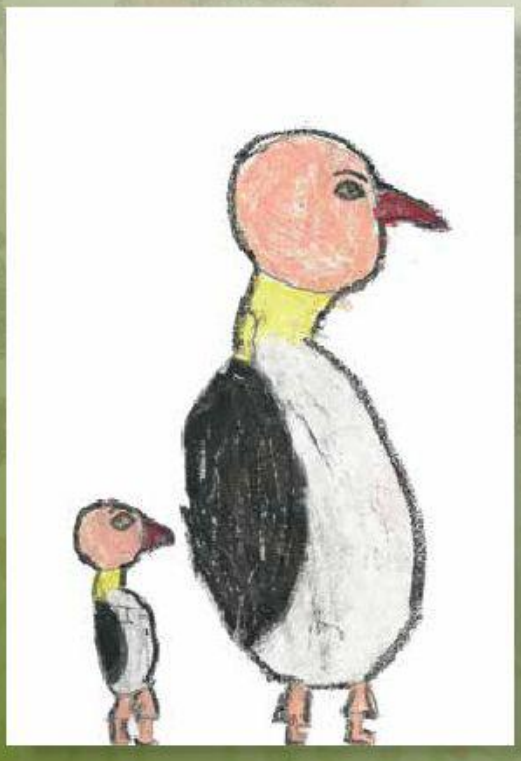

पेंगुइन

यह पेंगुइन हैं।

यह बर्फीले पानी में रहते हैं।

पेंगुइन काले व सफ़ेद रंग के होते हैं।

यह पानी में तैर सकते हैं व बर्फ पर चलते हैं।

यह हमेशा झुण्ड में रहते हैं।

Drawing & Poem by : Pranshu (I)

PDF Compressor Free Version

नन्हे चूहे का कमाल

एक बिल्ली ने सभी को परेशान कर रखा था वह प्रतिदिन किसी न किसी चूहे को खा जाती थी और डकार भी नहीं लेती थी। बिल्ली के इस आतंक को देखकर एक दिन सभी चूहों ने एक सभा बुलाई। उनमें से एक बूढ़े चूहे ने कहा,"क्या किया जाए इस बिल्ली का, ऐसे तो यह हमारे परिवार को ही खा जाएगी।" सभी ने मिलकर पूछा, इस बिल्ली का क्या किया जाए। बूढ़े चूहे ने सलाह दी कि बिल्ली के गले में घण्टी बाँध दी जाए तो उसके आने का पता चल जाएगा और हम सतर्क हो जाएँगे। यह सुनकर सभी खुश हो गए परन्तु जब घंटी बाँधने की बारी आई तो सभी चुप हो गए। सभा के बीच से धीरे से आवाज़ आई, "मैं बाँधूगा बिल्ली के गले में घंटी।" सभी हैरान होकर उस तरफ देखने लगे। वह एक चूहे का छोटा-सा बच्चा था। सभी मिलकर एक साथ बोले- तुम्हारे बस की बात नहीं। जाओ जाकर खेलो। लेकिन वह नहीं माना और घंटी लेकर दौड़ गया। वह एक पेड़ पर चढ़ कर बिल्ली को ढूँढ़ने लगा। उसे दूर से बिल्ली दिखाई दी। उसने आवाज़ लगाई, "अरे मौसी! कहाँ घूम रही हो, मैं तो यहाँ हूँ।" बिल्ली ने ऊपर देखा और कहा, "तेरी इतनी हिम्मत ठहर अभी आती हूँ।" नन्हा चूहा तेज़ी से भागा और बोला, "आजा-आजा पकड़ मुझे।" नन्हा चूहा कभी इधर भागता तो कभी उधर। लेकिन बिल्ली की पकड़ में नहीं आया। बिल्ली थक कर बैठ गई तो नन्हें चूहे ने कहा, "ये लो मौसी तुम्हारा इनाम।" नन्हें चूहे ने बिल्ली के गले में घंटी बाँध दी। जल्दी ही यह बात सभी चूहों में आग की तरह फ़ैल गई। यह जानकार सभी बहुत खुश हुए। सबने मिलकर पार्टी मनाई और नन्हें चूहे को इनाम दिया।

Story by : Sachin Thakur (V), Karan Kumar (V)

गाँव का तोहफा

एक किसान था। वो बहुत गरीब था उसका बेटा स्कूल में पढ़ता था। उसके बेटे का नाम श्याम था। श्याम के पिता सुबह खाना खाकर दिनभर खेत में काम करते थे। श्याम की माँ खाना बनाकर खेत में काम करने जाती थी। श्याम सुबह स्कूल जाता था। स्कूल से आकर दोपहर में अपने माँ-बाप के साथ खेत में काम करता था। एक बार उसकी माँ बीमार पड़ गईं। इलाज के अभाव के कारण उसकी माँ की मृत्यु हो गई। इस दुःख के साथ धीरे-धीरे श्याम बड़ा होने लगा। अब वह पढ़ाई को ओर अधिक मन लगाकर करता। पढ़-लिखकर श्याम एक बड़ा आदमी बना। उसने गाँव में एक बड़ा अस्पताल खुलवाया तथा उस अस्पताल का नाम अपनी माँ के नाम पर रखा। जहाँ सभी लोगों का इलाज मुफ्त में होता था। लोगों को सही समय पर मिलते हुए इलाज को देखकर श्याम अपनी माँ के दुःख को भूल गया और अपने परिवार के साथ हँसी ख़ुशी जीवन व्यतीत करने लगा।

Story by : Sachin Kumar (V)

PDF Compressor Free Version

मेरा सुन्दर सपना

मेरा है, एक सपना,
ऊँचा करूँगी देश का नाम अपना।
कलेक्टर बनना है,
सरपट काम करना है।
मेरा है, एक सपना।

सबको सिखाना है,
देश हमको चलाना है।
पूरी है मेरी तैयारी,
देखेगी दुनिया सारी।
मेरा है, एक सपना।

बिजली से लेकर कार बनाना है,
हँसता-खेलता संसार बनाना है।
होगी चारों तरफ खुशहाली,
विश्व प्रशंसा करेगा हमारी।
मेरा है, एक सपना।

देश से भ्रष्टाचार मिटाऊँगी,
भारत को सर्वप्रथम बनाऊँगी।
देखेगा पूरा संसार,
भारत तरक्की करेगा लगातार।
मेरा है, एक सपना,
ऊँचा करूँगी देश का नाम अपना।

Collage by : Krishna Kumar (VI),
Amit Kumar (VI)
Poem by : Anjali Rajak (VII)

PDF Compressor Free Version

एकता में बल

एक बार की बात है। सोनपुर गाँव में एक गडरिया रहता था। उसका नाम रवि था। वह गायें और भेड़ों को पालता था। वह उन्हें चराने के लिए गाँव के साथ लगे पहाड़ पर ले जाता। एक दिन वह अपने कुछ दोस्तों को भी लेकर चला गया। पहाड़ पर पहुँचकर उसके सारे जानवर घास चरने लग गए और वह अपने दोस्तों से बातें करते-करते इतनी दूर निकल गया की उसे अपने पशुओं का ध्यान ही नहीं रहा। जब उसे ध्यान आया तो दिन ढल चुका था। शाम हो चुकी थी। अपने पशुओं को पास न देखकर उसका मन चिंतित हो उठा। वह शीघ्रता से अपने पशुओं की ओर दौड़ा। लेकिन अब तक रात हो चुकी थी। गहरे अंधकार में पहाड़ियाँ और भी डरावनी प्रतीत हो रही थी। अचानक से किसी जानवर के दहाड़ने की आवाज़ सुनाई दी। जैसे-तैसे उसने अपनी आवाज़ से पशुओं को इकट्ठा कर लिया। दहाड़ने की आवाज़ और नज़दीक आती गई। गडरिया यह देखकर भयभीत हो उठा की वह आवाज़ एक शेर की थी। गड़रिये ने सभी पशुओं को आवाज़ लगाकर सावधान किया और झुंड में रहने के लिए कहा। तभी शेर ने एक भेड़ के बच्चे को पकड़ लिया यह देखकर भेड़ का दिल संताप से भर उठा। भेड़ के इस दुःख को देखकर पूरे झुंड के जानवरों से रहा नहीं गया। उन्होंने ठान ली की हम अपनी जान की बाज़ी लगाकर छोटे बच्चे को बचाएँगे। वे सब एक साथ मिलकर शेर पर टूट पड़े। शेर उन सबको झुंड में आता देखकर घबरा गया और जंगल की तरफ दुम दबाकर भागा। इस प्रकार एक पर आई मुसीबत का सामना पूरे झुंड ने किया। इसलिए कहा है कि 'एकता में बल है'।

Story by : Manish (VII), Lakhan (VII), Dheeraj (VII) & Shivani (VIII)

कौन बनेगा दरबार का मंत्री

बहुत समय पहले की बात है। एक सुन्दर वन में एक चालाक चूहा रहता था। वह अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था, तभी राजा ने सभी जंगल के पशु-पक्षियों को बुलाया और कहा, "मुझे अपने दरबार के लिए एक नया मंत्री चाहिए, क्योंकि हमारा पुराना मंत्री बूढ़ा हो गया है। "राजा ने कहा, "कौन बनेगा दरबार का मंत्री।" सभी जानवर बोले मैं बनूँगा, मैं बनूँगा दरबार का मंत्री।" सभी जानवर झगड़ने लगे। यह देखकर राजा परेशान हो गया, तभी राजा को एक तरकीब सूझी और राजा ने कहा, "जो कल सबसे पहले उस पर्वत पर पहुँचेगा। उसे ही दरबार का मंत्री बनाया जाएगा। तभी एक चूहा बोला मैं ही बनूँगा मंत्री। यह बात सुनकर सभी हँसने लगे और कहा,"तुम मंत्री बनोगे।" हा..हा..। राजा ने कहा, "चलो तुम्हें भी प्रतियोगिता में शामिल करते हैं।" दूसरे दिन राजा के आने के बाद प्रतियोगिता शुरू हुई। चूहा सबसे पहले ऊपर पर्वत पर पहुँच गया। सभी जानवर यह देखकर हैरान हो गए कि चूहा सबसे पहले, ऊपर कैसे पहुँच गया। राजा ने चूहे को अपना मंत्री घोषित कर दिया। वह (राजा) जानना चाहता था कि चूहा सबसे पहले पर्वत पर चढ़ा कैसे? चूहे ने सभी को बताया की इस पर्वत में मेरे बहुत सारे घर हैं जिनकी मदद से मैं पर्वत पर चढ़ गया। यह जानकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। राजा को चूहे की चतुराई पसंद आई।

Story by : Vijay Raj (V)

PDF Compressor Free Version

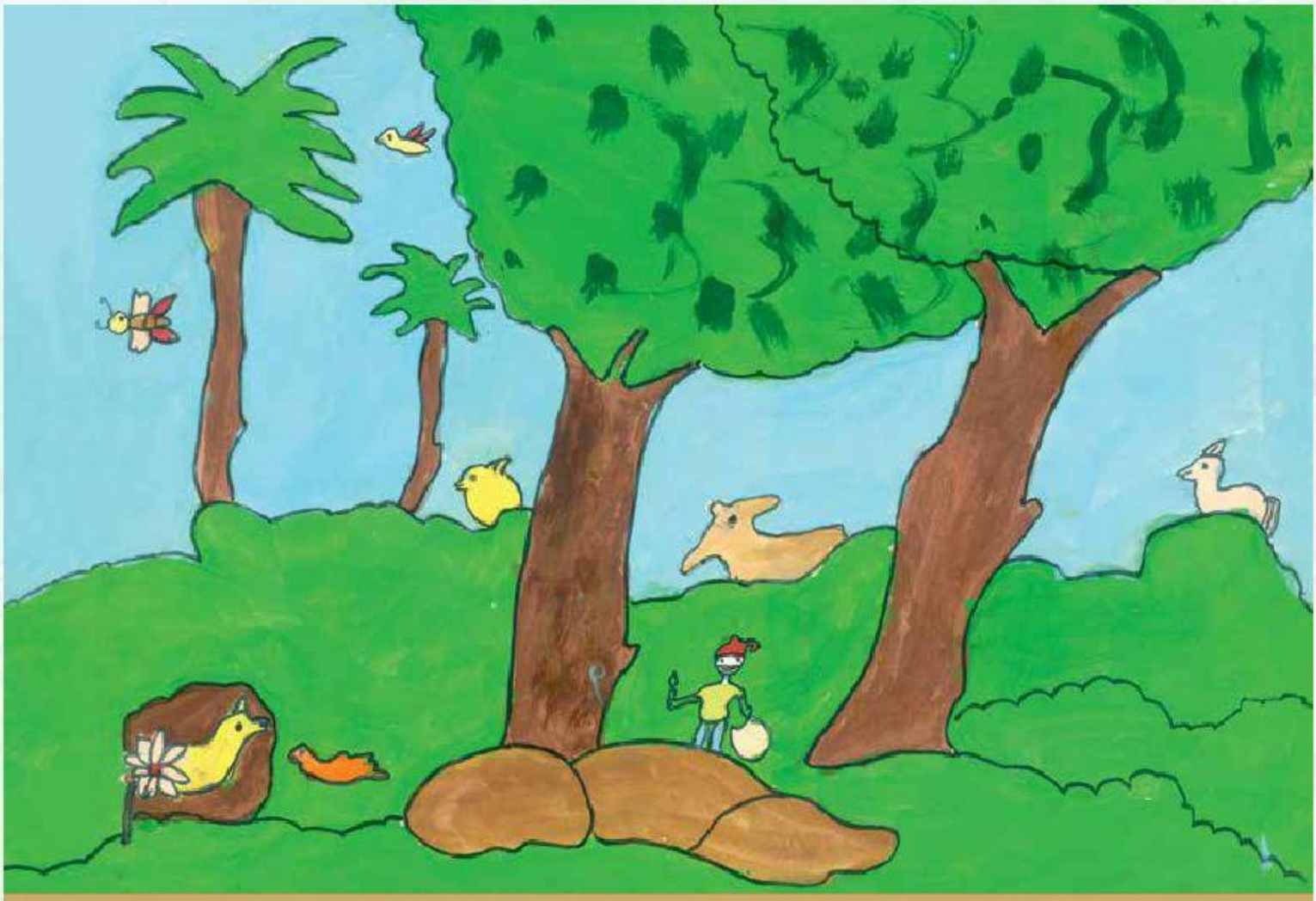

पेड़ की पुकार

मैं छोटा सा बीज हूँ। किसी समुद्र से बहते-बहते एक किनारे में आ गया। मुझे धीरे-धीरे हवा, पानी मिलने लगा और मैं बड़ा हो गया। जब मैं बहुत बड़ा हो गया तो मेरे डाल पर एक पक्षी ने अपना घोंसला बनाया। फिर मेरे आस-पास बहुत से पक्षी आने-जाने लगे। जब मुझमें फल आने लगे तो सभी बच्चे फल खाने लगे। तो मुझे बहुत अच्छा लगता था। फिर कुछ सालों बाद वहां पर बड़ी-बड़ी इमारतें बनने लगी और लोग मेरे मित्रों को काटने लगे। अगर हमें इसी तरह काट दोगे तो मेरे मित्र जीव-जंतु कहाँ पर रहेंगे? तुम्हे मीठे-मीठे फल कौन देगा? फिर सारे नदी, जंगलों को काटकर उन जगहों पर बड़े-बड़े कारखाने बनने लगे। जिसके कारण प्रदूषण होने लगा। लोग मेरे आस-पास कचरा फेंकने लगे। जिसके कारण मैं सूख गया था, मेरे पास कोई भी नहीं आता था मेरे डाल पर कोई चिड़िया अपना घोंसला नहीं बनाती। मैं अकेला पड़ गया था। मैं इस दुनिया के हर एक व्यक्ति को जीवन प्रदान करता हूँ। लेकिन जिन्हे मैं हवा, फल और घर आदि प्रदान करता हूँ क्या वह व्यक्ति हमें रहने के लिए जंगल और ज़िंदा रहने के लिए पानी देते हैं? नहीं, हम उन्हें अपने जीवन का बहुत सा हिस्सा देते हैं। लेकिन वे हमें काटकर जला देते हैं और हमें काटकर फेंक देते हैं। इंसान हमें जीने क्यों नहीं देते? हमने उनका क्या बिगाड़ा अगर हम सब ना हों तो तुम्हे हवा, फल और पेड़ों से बनने वाली दवाइयाँ कौन देगा। अगर हम ना होंगे तो तुम सब इंसान ज़िंदा नहीं रहोगे।

Drawing by : Manisha (VII)
Story by : Karan (VII)

PDF Compressor Free Version

जंगल हमारे मित्र

एक समय की बात है, जंगल के सभी जानवर प्यार से रहते थे, तथा एक-दूसरे की मदद करते थे। जंगल में जानवर खाते-पीते और मज़े से जी रहे थे। पक्षी भी खुशहाली से जी रहे थे। कुछ दिन बाद जंगल के बीच एक खाली मैदान बन गया और पेड़ नहीं थे। धीरे-धीरे यह बात जंगल में फैल गई। जब यह बात जंगल के राजा (शेर सिंह) को पता चली तो, उसने अपने मंत्री से कह कर जानवरों की सभा बुलाई। राजा ने कहा, "यदि जंगल नहीं रहेगा तो, हमे सांस लेने के लिए वायु और खाने के लिए भोजन नहीं मिलेगा और हमारा जीवन नष्ट हो जाएगा। अत: जंगल को बचाना हमारी ज़रूरत व कर्तव्य दोनों है। अब राजा ने जंगल की रखवाली की ज़िम्मेदारी उल्लू व लोमड़ी को सौंपी। उल्लू रात में पहरा देता तथा लोमड़ी दिन में जंगल का ध्यान रखती। कुछ समय बाद दोनों ने राजा को सूचना दी की कुछ लोग समूह में आकर जंगल के पेड़ों को काट कर अपने साथ ले जाते हैं। यह बात जानकार राजा ने सभी जानवरों को बुलाया और कहा, "उल्लू और लोमड़ी की दी गई जानकारी के अनुसार कुछ मनुष्य जंगल को नष्ट कर रहे हैं। जो हमारे जीवन के लिए खतरे की बात है हमे इसे रोकना होगा।" अगले दिन जब मनुष्य पेड़ काटने आए तो सभी जानवरों ने उन्हें डरा कर भगा दिया।

Story by : Neeraj (V)

लापरवाही

एक बार एक जंगल में अनेक जंगली जानवर रहते थे। जंगल चारों तरफ से खूबसूरत पहाड़ियों से घिरा था। पहाड़ियों से बहता हुआ झरना जंगल की शोभा बढ़ाता था और अनेक जंगली जानवरों की प्यास बुझाता था। जंगल में एक शेर और शेरनी अपने बच्चों के साथ सुन्दर लताओं से घिरी हुई गुफा में रहते थे।

एक दिन एक भूखे भेड़िये की नजर शेर के नटखट बच्चों पर पड़ी। उसने सोचा कि क्यों न इन्हें अपना शिकार बनाया जाए। अपनी इसी योजना को पूरा करने के लिए वह गुफा के पास ही छिपकर रहने लगा और हरदम गुफा पर पैनी नज़र रखता। एक दिन उसने देखा कि शेर शिकार के लिए गुफा से दूर गया है और शेरनी पीछे से बच्चों का ध्यान रख रही है। भेड़िया गुफा के नज़दीक गया और शेरनी से बोला कि शेर को किसी शिकारी ने अपने जाल में फंसा लिया है। शेरनी यह सुनकर परेशान हो गई और आनन-फानन में बिना सोचे समझे भेड़िये को अपने बच्चों का ध्यान रखने के लिए बोलकर स्वयं शेर की तरफ दौड़ी। भेड़िये को लगा कि जैसे उसके मन की मुराद पूरी हो गई है। वह जैसा चाहता था वही हो रहा था। शेरनी के वहां से जाते ही भेड़िया गुफा की तरफ तेज़ी से बढ़ा और बच्चों पर झपटा। बच्चे डर के मारे इधर-उधर भागने लगे। लेकिन भूखे भेड़िये को उन पर तनिक भी दया नहीं आई और पलक झपकते ही उन्हें अपना भोजन बना लिया। उधर जब शेरनी ने शेर को आज़ाद घूमते देखा तो भेड़िये की चाल समझते देर न लगी। वह तुरंत अपनी गुफा की तरफ दौड़ी। गुफा पर पहुँचकर जब उसने अपने बच्चों का खून देखा तो वह अचेत होकर भूमि पर गिर गई और विलाप करने लगी। वह सोचने लगी- "मैंने उस भेड़िये की बातों में आकर इतनी बड़ी गलती कैसे कर दी। काश! मैं उसकी बातों में न आती तो मेरे बच्चे ज़िंदा होते।" शिक्षा- किसी की बातों में नहीं आना चाहिए। अपनी समझदारी से काम लेना चाहिए।

Story by : Ravi (VIII), Kush (VIII), Ishank (VII) & Birajbhan (VII)

PDF Compressor Free Version

जंगल है घर हमारा

एक बार दो लकड़हारे थे। उन्हें लकड़ियों की ज़रुरत थी। उन दोनों ने सोचा- "क्यों न जंगल जाया जाए और लकड़ियाँ काटी जाएँ।" दोनों जंगल में पहुँच जाते हैं और असंख्य पेड़ देख कर खुश हो जाते हैं। उसके बाद वे पेड़ काटना शुरू कर देते हैं। एक हिरन वहाँ घास चर रहा था। जब वह देखता है कि कुछ लोग पेड़ काट रहे हैं तो वह भागता हुआ लोमड़ी के पास जाता है और कहता है-" लोमड़ी-लोमड़ी!, कुछ लोग हमारे जंगल से पेड़ काट रहें हैं। लोमड़ी कहती है- "चलो, हाथी के पास चलते हैं" दोनों मिलकर हाथी के पास जाते हैं। और कहते है- "हाथी भाई! हमारे जंगल के पेड़ काटे जा रहें हैं।" हाथी बोलता है- "चलो बंदर और लंगूर के पास चलते हैं।" तीनो मिलकर बंदर और लंगूर को सारी बात बताते हैं। उन दोनों ने सुझाव दिया कि सब मिलकर शेर के पास चलते हैं क्योंकि शेर जंगल का राजा है और वही हमारी समस्या का हल निकाल सकता है। सब मिलकर शेर के पास जाते हैं और पूरी बात बताते हैं। यह सब सुनकर शेर गुस्से में लाल हो उठता है और कहता है कि चलो मुझे बताओ कौन जंगल काटने आया है? सब मिलकर उन लकड़हारों के पास जाते हैं। शेर पूछता है- "तुम हमारा जंगल क्यों काट रहे हो?" एक लकड़हारा बोला- "हमें घर बनाने के लिए लकड़ियाँ चाहिए।" शेर ने कहा- "तुम तो ईंट पत्थरों के घरों में रह सकते हो तो उनके घर क्यों नही बना लेते हो?" लकड़हारे बोले- "नहीं, हमें पेड़ों से ही घर बनाना है।" शेर गुस्से में आकर बोला- "लकड़हारो! मुझे भूख लगी है क्यों न मैं तुझे खा लूँ?" लकड़हारे घबराकर बोले- "शेर भाई! हमें तुम्हारी बात समझ में आ गई है।"

Drawing & Story by : Bobby (VIII)

PDF Compressor Free Version

हिरन का बच्चा

एक राजा था। उसका एक बेटा था। जिसका नाम उसमान था। वह बहुत सुशील और समझदार था। उसके मन में सभी के प्रति प्रेमभाव था। वह प्रतिदिन जंगल में घूमने जाया करता था। एक दिन उसने घूमते-घूमते देखा कि एक हिरन का बच्चा ज़ख़्मी था। उसके पैर में चोट लगी थी। उसमान ने जल्दी से जंगल में से जड़ी-बूटी ली और मसलकर उसके पैर में लगा दी। वह हिरन का बच्चा बहुत प्यारा था। अब वह दोनों पक्के दोस्त बन गए। उसमान प्रतिदिन जंगल में हिरन के बच्चे के साथ खेलता और शाम होते ही लौट जाता। एक दिन जब वह खेलने गया तो उसे हिरन का बच्चा नहीं मिला। उसमान ने सभी जगह उसे तलाश किया परन्तु हिरन का बच्चा नहीं मिला। वह उदास होकर पेड़ के नीचे बैठ गया। तभी उसे झाड़ियों के पीछे से आवाज़ सुनाई दी। उसने वहां जाकर देखा तो हिरन का बच्चा वहाँ नहीं था किन्तु वहाँ पैरों के निशान थे। अब वह उन पैरों के निशानों के साथ-साथ चलने लगा। थोड़ी दूर जाकर उसने देखा कि शिकारी ने हिरन के बच्चे को पकड़ रखा है। उसमान ने कुछ देर सोचा फिर उसने शेर की तरह दहाड़ा। दहाड़ को सुनकर शिकारी के हाथ से हिरन का बच्चा छूट गया। हिरन का बच्चा छूटते ही उसमान के पास दौड़ा और उसमान बच्चे को लेकर महल की तरफ दौड़ा। शिकारी ने उसमान का पीछा किया। उसमान ने महल में पहुँचते ही सिपाहियों को शिकारी को पकड़ने का आदेश दिया। सिपाहियों ने शिकारी को पकड़ कर जेल में डाल दिया। अब हिरन का बच्चा उसमान के साथ हँसी-खुशी रहने लगा।

Story by : Shiva (V)

सच्ची दोस्ती

एक जंगल में एक शेर रहता था। वहीं नदी के किनारे एक हिरन रहता था। एक बार शेर नदी पर पानी पीने गया। उसे देखकर हिरन डर कर भागने लगा तभी शेर ने आवाज़ लगाई। रुको, हिरन भाई मुझसे डरने की ज़रूरत नहीं हैं। मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता हूँ। यह सुनकर हिरन वापिस शेर के पास आ गया और वे दोनों दोस्त बन गए। एक दिन शेर के पांव में काँटा चुभ गया और वह दर्द से कराहने लगा। जब हिरन को पता चला तो वह दौड़ा-दौड़ा शेर के पास आया और उसका काँटा निकाल कर फेंक दिया। शेर ने उसका धन्यवाद किया और बोला कि मित्र "आज तुमने काँटा निकाल कर मेरी सहायता की है। भविष्य में तुम जब भी मुसीबत में फंस जाओ तो मुझे पुकार लेना। मैं दौड़कर तुम्हारे पास आ जाऊँगा।"

एक दिन हिरन जंगल में घास चर रहा था। वहीं शिकारी ने अपना जाल फैला रखा था। घास चरते-चरते हिरन शिकारी के जाल में फंस गया और बचाव के लिए चिल्लाने लगा। शेर ने जब हिरन की आवाज़ सुनी तो वह समझ गया कि उसका दोस्त किसी न किसी मुसीबत में फंस गया है। वह बिना देर किए उस ओर दौड़ पड़ा। उसने देखा कि शिकारी ने हिरन को पकड़ रखा है। शेर ने झाड़ी के पीछे से दहाड़ लगाई। शेर की दहाड़ सुनते ही शिकारी के पसीने छूट गए और वह अपनी जान बचाने के लिए हिरन और जाल को वहीं छोड़ कर तेज़ भागा। शेर ने मुँह से जाल काट कर हिरन को मुक्त किया। हिरन ने शेर का धन्यवाद किया। अब हिरन को विश्वास हो गया कि शेर उसका सच्चा दोस्त है।

Story by : Sanjay Kumar (VIII)

PDF Compressor Free Version

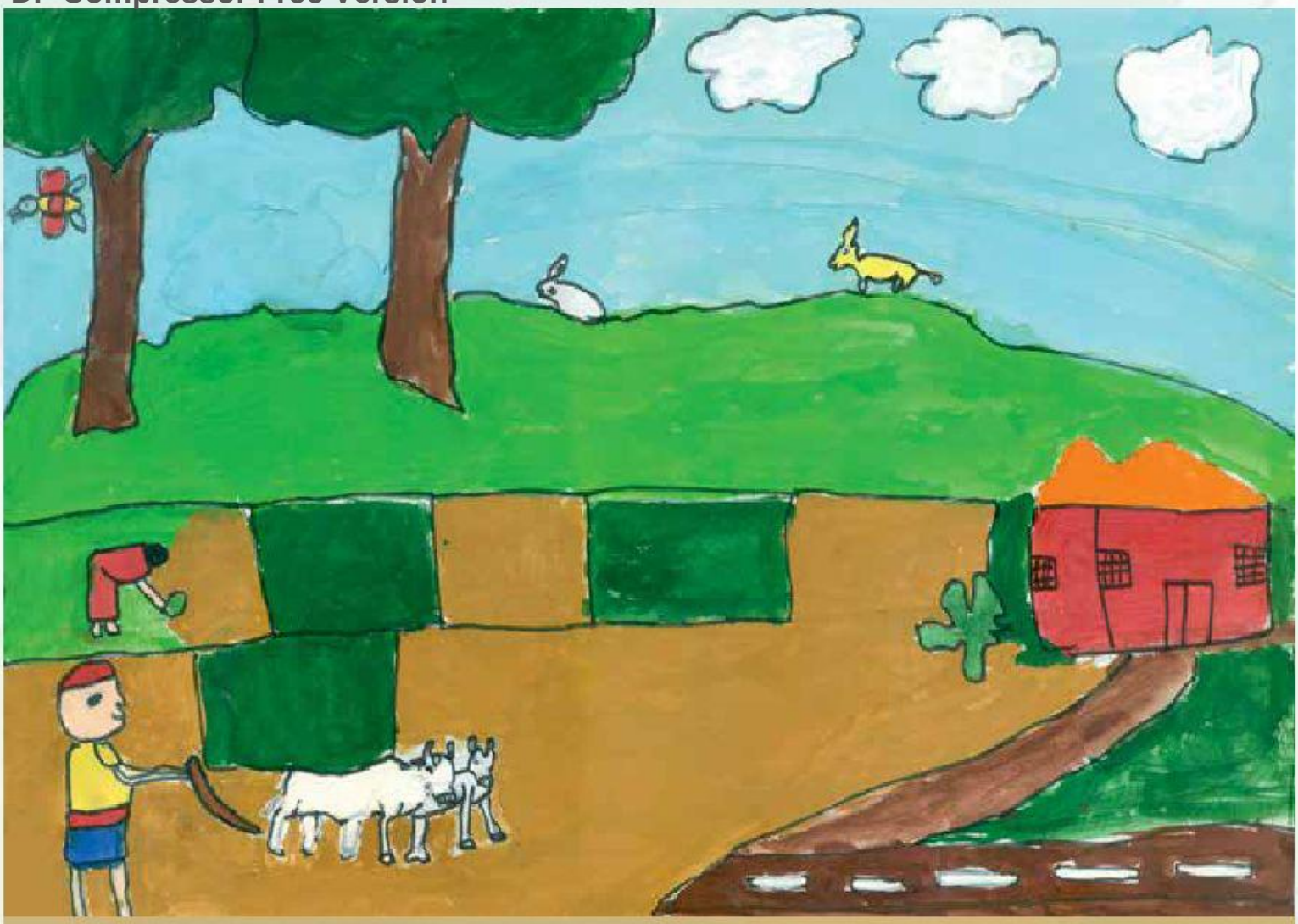

किसान का खेत

एक किसान था। उसका नाम अभय सिंह था। वह अपने खेत में गाजर बोता था। एक गिलहरी उसके खेत में गाजर खाने के लिए हर रोज़ आ जाती थी। एक दिन किसान ने देखा कि उसकी गाजरें कुतरी हुई हैं। किसान ने एक योजना बनाई। उसने खेत से लेकर अपने घर तक पूरे रास्ते में गाजरें बिछा दी। गिलहरी गाजरें खा-खाकर किसान के घर तक पहुँच गई। किसान को गुस्सा आया और उसने गिलहरी को पकड़ कर एक डिब्बे में बंद कर दिया और एक गाड़ी में डाल दिया। गाड़ी वाला गाड़ी लेकर उसी किसान के खेत से गाजर लेने चला गया जिस खेत से गिलहरी आई थी। जैसे ही गाड़ी के ड्राइवर ने डिब्बा खोला गिलहरी उछल कर पेड़ पर चढ़ गई। गाड़ी वाला अपनी गाड़ी में गाजर भर कर वहाँ से चला गया। गिलहरी पेड़ पर से उतरी और गाजर खाने खेत में चली गई। इस प्रकार किसान का खेत गिलहरी का घर बन गया था।

Drawing by : Sajjad (VI)
Story by : Varsha (VI)

PDF Compressor Free Version

गाँव की छुट्टियाँ

इन गर्मियों की छुट्टी में मैं गाँव गया था। हम बहुत समय के बाद गाँव गए थे। गाँव बहुत बदल गया था। वहाँ घर पहले से ज़्यादा थे और पेड़ कम थे। मैं बहुत उत्साहित था। मैं अपने भाइयों के साथ नदी पर गया। नदी का पानी गन्दा था। लोग उसमें कपड़े धो रहे थे और नहा रहे थे। इन सभी चीज़ों से नदी का पानी गन्दा हो रहा था। मुझे यह सब सही नहीं लगा। अगले दिन मैं अपने दादाजी के साथ सैर पर गया। मैंने उनसे कहा कि मुझे जंगल में जाना है। वह मुझे जंगल ले गए। मैंने देखा की पेड़ों की संख्या बहुत कम हो गयी है। मैंने अपने दादाजी से पूछा- "यह गाँव पहले से बदल गया है। जब मैं पहले आया था तो नदी का पानी साफ था और वनों की मात्रा भी अधिक थी। प्रकृति में जैसे उत्साह था।" दादाजी ने कहा कि यह लोगों की मजबूरी है। बढ़ती जनसंख्या के कारण यहाँ के लोग वनों को काटते हैं और अपने घर बनाते हैं। लेकिन हमें इस समस्या का हल निकालना होगा। मेरे मित्र का भाई गाँव का सरपंच है। उससे कहकर "पंचायत घर में एक सभा बुलवाएंगे।" दादाजी के कहने पर सरपंच जी ने एक सभा बुलवाई। सरपंच जी ने सभा में आए सभी सदस्यों को सारी बात बताई। उसके बाद चर्चा शुरू हुई। सभा में बैठे सदस्यों में से एक ने पूछा- "हम नदी के गंदे पानी को कैसे स्वच्छ कर सकते हैं?" सरपंच जी ने बताया कि हमे नदी में कूड़ा नहीं डालना चाहिए, नहाना नहीं चाहिए और तट पर कपड़े नहीं धोने चाहिए। उन्होंने कहा- "तो हम पानी से जुड़े घरेलु काम कैसे करेंगे? सभी लोगों ने इस पर मिल कर चर्चा की और थोड़ी देर बाद इस समस्या का हल निकल गया। सरपंच जी ने कहा- "हम गाँव में हैंडपंप, नलकूपों और कुओं आदि का प्रबंध करेंगे।" आप अपने जल से जुड़े काम उन्हीं से करना। इस समस्या का हल तो निकल गया। लेकिन हम वनों की मात्रा अधिक कैसे कर सकते हैं? सरपंच जी ने कहा अगर गाँव का हर एक निवासी एक पेड़ लगाए तो यह गाँव हरा-भरा हो जाएगा। इसी तरह सभी लोगों ने सारी समस्या का हल ढूंढ लिया।

Story by : Manish Nagi (VII)

मेरा बगीचा

मेरे घर के पीछे काफी खाली ज़मीन है यहाँ हमारा बगीचा है। यह बगीचा मुझे बहुत प्यारा है। मैं अपना खाली समय अपने बगीचे में बिताता हूँ। इस बगीचे में फल-फूल तथा सब्जियों के पेड़-पौधे लगे हैं। इन सबकी देखभाल मेरे दादा जी करते हैं। इसमें मैं उनकी मदद करता हूँ। हमारे बगीचे में आम, जामुन, बेर तथा अमरुद के पेड़ हैं। मेरे दादा जी कहते हैं कि इन पेड़ों को मेरे परदादा जी ने लगाया था। दादा जी बताते है कि उन्होंने बचपन से ही इन पेड़ों की देखभाल की है। इनकी डालियों पर झूला झूलकर उन्होंने अपना बचपन बिताया है। मैं भी प्रतिदिन इस बगीचे में जाता हूँ और अपने दादा जी की मदद करता हूँ। दादा जी मुझे और मेरे दोस्तों को आम, अमरूद, बेर तथा जामुन खाने को देते हैं। मुझे भी पेड़ों से बहुत प्यार है। मैं अपने हर जन्मदिन पर अपने बगीचे में एक पेड़ लगाता हूँ। हम सभी को पेड़ लगाने चाहिए जिससे हमारी धरती हरी-भरी रहे।

Story by : Aashish (IV)

PDF Compressor Free Version

बत्तख रानी

बत्तख रानी बत्तख रानी
तुम तो हो बड़ी सयानी।

तुम पानी में रहती हो
दिनभर तैरती रहती हो।

मैं भी तुम सा बनना चाहूँ
संग पानी में खेलना चाहूँ।

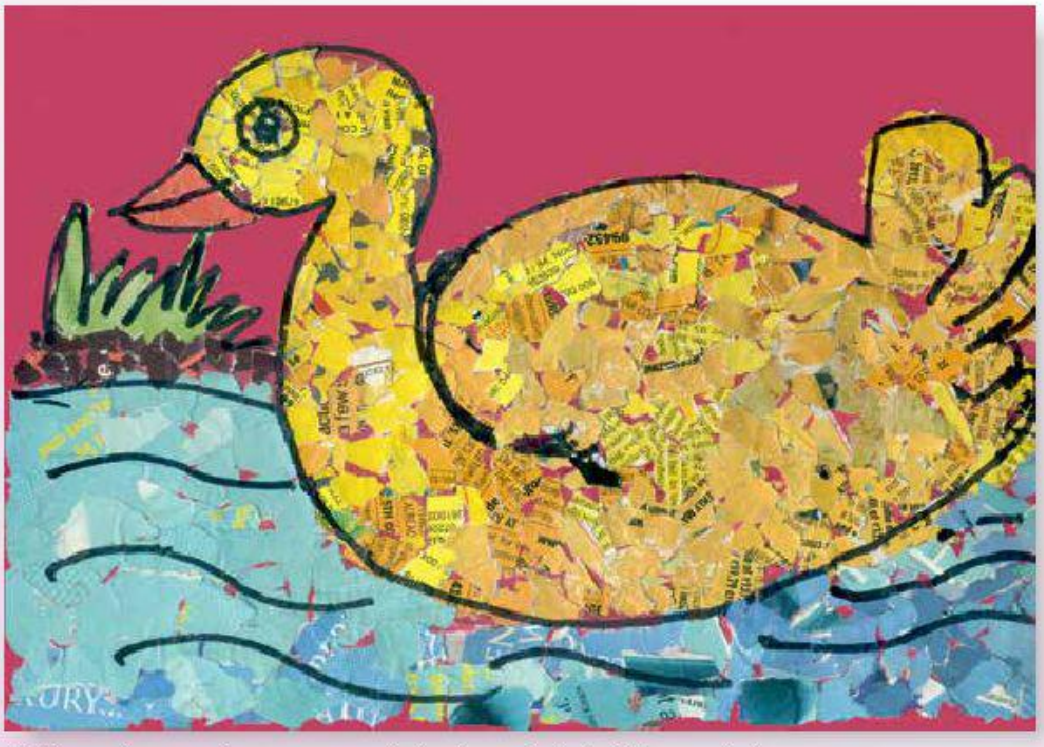

Collage & Poem by : Neema (III), Ilma (III) & Shivam (III)

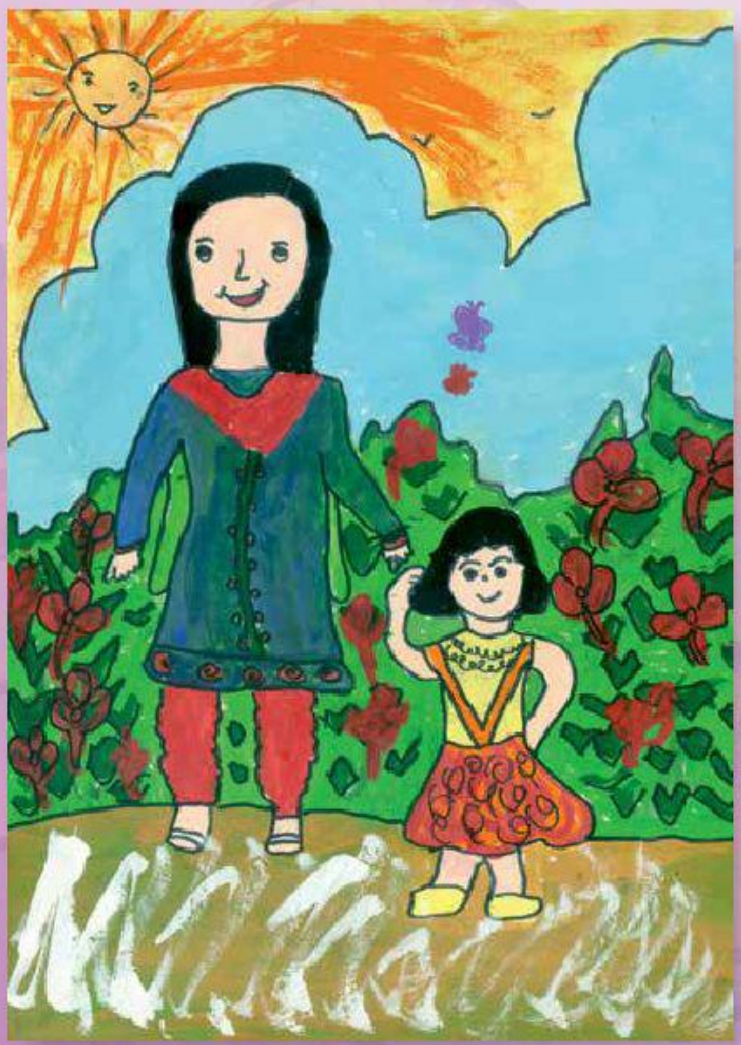

मेरी मैम

मेरी कक्षा बहुत सुन्दर है। हमारी कक्षा में हम प्रतिदिन सफाई करते हैं। हम हर हफ्ते बाद अपनी कक्षा के मेज़-कुर्सी भी साफ करते हैं। हमारी कक्षा के कुछ नियम हैं जिनका हम पालन करते हैं। हमारी कक्षा में जितनी भी और मैम आती हैं। हम उनकी बात मानते हैं। हमें सभी मैम खिलवाती भी हैं और पढ़ाती भी हैं। जब मैम श्यामपट्ट पर लिखती हैं तो हम भी अच्छी लिखाई में लिखते हैं। हमें अपनी मैम बहुत अच्छी लगती हैं।

Drawing by : Ishu (IV)
Story by : Dropadi (VII)

PDF Compressor Free Version

Glass Painting by : Rekha (VIII), Anju (VII)

Glass Painting by : Raashi (V)

Glass Painting by : Durgesh (V)

स्टेन ग्लास गिरजाघरों की खिड़कियों और दरवाज़ों के शीशों पर होती थी। कला के क्षेत्र में इसमें बहुत से कार्य होते हैं। उसी विधि का यहाँ पर बच्चों ने प्रयोग किया है। और अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया है, बच्चों ने इस कार्य को बहुत ही धैर्य के साथ पूर्ण किया है। जो अपने आप में एक सराहनीय कार्य है। इसे बच्चों ने अनुरेखण के द्वारा सम्पन किया है जिसके कुछ उदाहरण यहाँ पर प्रदर्शित किये गए हैं।

Glass Painting by : Gautam (VI)

PDF Compressor Free Version

Glass Painting by : Raj (V)

Glass Painting by : Bobby (VIII), Hariom (VI), Deepu (VII) & Karan (VII)

Glass Painting by : Neeraj (V)

Glass Painting by : Mustaq (V)

Glass Painting by : Gitesh (V)

PDF Compressor Free Version

खुशियों का नगर

सुन्दर नगर बहुत सुन्दर और शांत नगर था। वहाँ के लोग भी शांत थे। गाँव के सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहते थे। गाँव के बाहर बनी चौपाल और पेड़ों पर अनेक पक्षी अपनी मधुर ध्वनि में चहचहाया करते थे। पक्षियों की चहचाहट इतनी मधुर होती थी कि ग्रामीण उन्हें सुनने के लिए गाँव की चौपाल पर इकट्ठे हो जाते थे। वे अपने साथ पक्षियों को डालने के लिए दाना भी लाते थे। वसंत ऋतु में कोयल की आवाज़ तो उन्हें मन्त्र मुग्ध कर देती थी। इस प्रकार ग्रामीणों और पक्षियों के बीच एक अनोखा सा रिश्ता बन चुका था। उसी गाँव में एक मोहित नाम का लड़का था जो अपना अधिकतर समय पक्षियों के साथ बिताता था। जैसे ही स्कूल की छुट्टी होती वह सीधा चौपाल पर पहुँच जाता और घंटों पक्षियों को निहारता रहता। पक्षियों और मोहित के बीच दोस्ती हो गई थी। वे मोहित से डरते नहीं थे बल्कि उसके सिर, कंधे आदि पर बैठ जाते थे। कभी-कभी तो उसके हाथ से रोटी भी छीनकर ले जाते थे। मोहित को भी यह सब बहुत अच्छा लगता। गाँव वालों की पक्षियों के प्रति इस प्रेम की चर्चा दूर-दूर तक फैली हुई थी।

दुर्भाग्य से पड़ोसी गाँव के शिकारियों की नज़र सुन्दर नगर के पक्षियों पर पड़ी। उन्होंने रात के समय सुन्दर नगर के पक्षियों को पकड़ने की योजना बनाई क्योंकि उन्हें डर था कि दिन के समय सुन्दर नगर के लोगों से बच पाना टेढ़ी खीर है। मौका पाकर एक रात कुछ शिकारियों ने अपने जाल के साथ गांव में प्रवेश किया और लगभग बीस पक्षियों को अपने साथ ले गए। सुबह जब मोहित स्कूल जा रहा था तो उसे पक्षियों की संख्या कुछ कम लगी। पक्षियों के करूण स्दन को सुनकर किसी अनहोनी की आशंका हुई। वह स्कूल न जाकर उल्टे पाँव गाँव की तरफ दौड़ा और गाँव वालों को सारी बात बताई। उसकी बात सुनकर गाँव वाले चौपाल की तरफ दौड़े। उन्हें यह भाँपते देर न लगी की यह पड़ोसी गाँव के शिकारियों का काम है। सबने मिलकर यह तय किया की गाँव के कुछ लोग बारी-बारी से प्रत्येक रात पहरेदारी करेंगे। अपनी आदत से मजबूर शिकारी फिर से गाँव में आए। शिकारी प्रवेश करते ही गाँव के बाहर बने गड्ढों में गिर गए। गाँव वालों ने उन्हें पकड़ लिया। शिकारी हाथ जोड़कर दया की भीख माँगने लगे। गाँव वालों ने शर्त रखी कि जब तक वे पकड़े हुए पक्षी उन्हें वापिस नहीं लौटाएँगे तब तक उन्हें छोड़ा नहीं जाएगा। गाँव वालों की शर्त को मानते हुए पिछली रात पकड़े हुए पक्षियों को वापिस लौटा दिया और गाँव में फिर कभी न आने का संकल्प लिया।

Story by : Anjali (VII), Rahul (II), Deepu (VII) & Kuldeep (VIII)

PDF Compressor Free Version

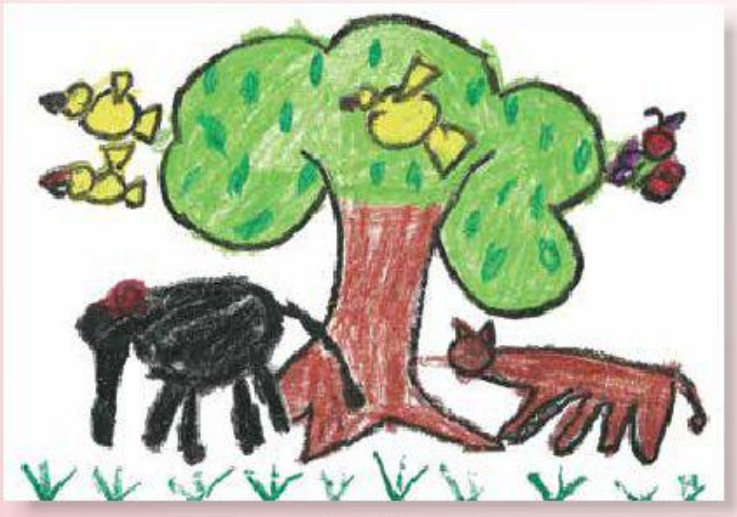

Drawing & Story by : Rohan (I)

प्यारी पिकनिक

एक दिन मेरा स्कूल हमें पिकनिक पर लेकर गया। हम एक चिड़ियाघर में गए। वहाँ पर बहुत सारे जानवर थे। मैंने हाथी और शेर को देखा। हाथी आगे-आगे जा रहा था और शेर उसके पीछे था। पेड़ पर एक सुन्दर चिड़िया बैठी थी। दो चिड़ियाँ उड़ रही थीं। हाथी और शेर को देखकर तितली मुस्कुरा रही थी।

मेरा घर

मेरा घर बहुत सुन्दर है। एक दिन अचानक बहुत बारिश होने लगी। तितली को भी बारिश बहुत अच्छी लगी वह भी खुश होकर नाचने लगी।

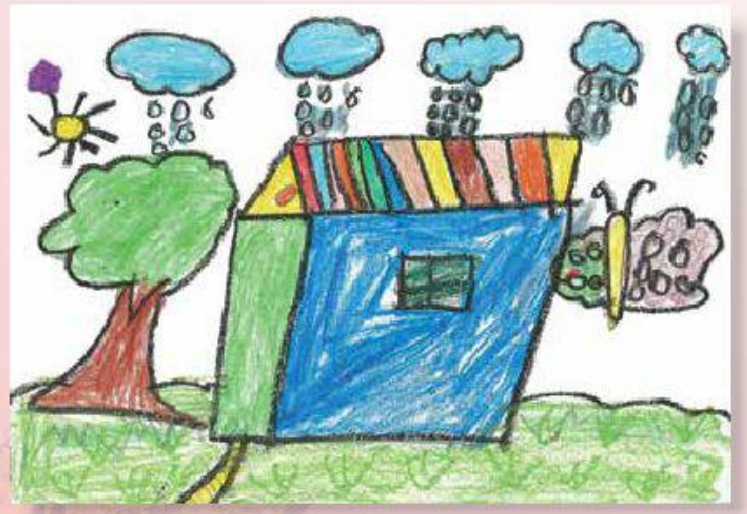

Drawing & Story by : Leema (Nursery)

Drawing & Story by : Sunita (I)

मेरा सपना

एक रात को मुझे सपना आया। मैं जंगल में घूमने गई। जंगल में खूब सारे पेड़ थे एक शेर घूम रहा था। एक तालाब में अनेक मछलियाँ तैर रही थीं। कमल का फूल खिला था जो कि बहुत सुन्दर लग रहा था। सूरज की तेज़ धूप पेड़ों पर पड़ रही थी। पक्षी उड़ रहे थे। आसमान में नीले-नीले बादल थे। मैं शेर को देखकर घबरा गई और डर कर भागी। इतने में मेरी आँख खुल गई। मैंने भगवान का शुक्रिया अदा किया कि ये सपना था असलियत नहीं।

PDF Compressor Free Version

पुरानी कहानी नया लिबास

एक बार एक कौआ मुँह में रोटी का टुकड़ा लिए पेड़ पर बैठा था। लोमड़ी वहाँ से गुज़र रही थी। तभी उसकी नज़र कौए पर पड़ी। कौए के मुँह में रोटी का टुकड़ा देखकर लोमड़ी के मुँह में पानी आ गया। उसका मन रोटी खाने को ललचा गया। लोमड़ी ने कौए से कहा कि कल मुझे तुम्हारी माँ मिली थी। वह तुम्हारे गाने की बहुत तारीफ कर रही थी। यह बात सुनकर मेरा मन तुम्हारा गाना सुनने के लिए उतावला हो रहा था और आज तुम्हे देखकर मुझे लगा भगवान ने मेरी इच्छा पूरी कर दी। अब तुम मिल ही गए हो तो एक गाना तो सुना दो। कौए ने लोमड़ी की पूरी बात ध्यान से सुनी और रोटी को पंजे के नीचे दबाया और कहा, "क्यों नहीं बहन? अभी सुनाता हूँ। वह गाना गाने लगा। गाना ख़त्म करने के बाद कौए ने पूछा," लोमड़ी बहन कैसा लगा मेरा गाना मज़ा आया और सुनाऊँ? कौए ने रोटी मुँह में ली और वह उड़ गया। लोमड़ी को बहुत गुस्सा आया और वह अपना-सा मुँह लेकर चली गई।

Story by: Bhumika (V) & Raashi (V)

दो भाई

दो भाई एक गाँव में रहते थे। दोनों बहुत ही मेहनती थे। दोनों काम खोजने पास के शहर गुड़गाँव गए। गुड़गाँव के राजा बहुत अच्छे थे। दोनों भाई काम ढूँढ़ने लगे पर दोनों को कोई काम नहीं मिल पाया। वह दोनों अपने गाँव वापस गए। दूसरे दिन वह फिर शहर आए। उस दिन भी उन्हें कोई काम न मिला। वह उदास होकर राजा के महल के बाहर बैठ गए। राजा ने उनको देखा और अपने पास बुलाया। दोनों ने राजा को अपने बारे में बताया। राजा ने उन्हें काम दिया। उसने उन्हें अपने महल में दरबान बनाया। दोनों भाई वहाँ पर खुशी-खुशी काम करने लगे।

Story by: Karan (III), Neeraj (III) & Manish (III)

हाथी का नया परिवार

एक जंगल में एक भोला-भाला हाथी रहता था। पर जंगल में सभी जानवर उसे बेवकूफ समझते थे। इसी कारण कोई उससे बात नहीं करता था। हाथी दुखी रहने लगा।

पास के एक गाँव का एक आदमी एक दिन जंगल में लकड़ियां बटोरने आया। आदमी ने हाथी को देखा। पहले वह उस बड़े हाथी को देखकर डर गया। फिर उसने हिम्मत की और पूछा, "तुम इतने दुखी क्यों हो? हाथी बोला, "मुझसे कोई बात नहीं करता। मेरा कोई दोस्त भी नहीं है।"

आदमी ने कुछ सोचकर कहा, "क्या तुम मेरे साथ मेरे घर चलोगे? मेरी एक बेटी है। उसका नाम चेतन्या है। वह तुम्हें देखकर खुश होगी।" हाथी चलने को तैयार हुआ। घर, जंगल से बाहर निकलकर गाँव की शुरुआत में ही था। आदमी ने अपनी पत्नी और बेटी को आवाज़ लगाई। दोनों हाथी को देखकर बहुत खुश हुईं। चेतन्या ने उसका नाम गजराज रख दिया। गजराज अपने नए परिवार से मिलकर खुश हुआ। गजराज अब अपने परिवार की मदद भी करने लगा जिससे सभी खुशी-खुशी रहने लगे।

Story by : Vishal Kumar (IV)

PDF Compressor Free Version

कहानी- रोड सेफ्टी

पात्र परिचय

अनिकेत- एक बिगड़ा लड़का

रवि- एक अच्छा लड़का राधा- एक कॉलेज जाने वाली लड़की

मम्मी- राधा की माँ पापा- राधा के पापा

भाग - I

दो मित्र रहते हैं, जिनमें एक है अनिकेत जो बहुत अमीर तथा बिगड़ा हुआ लड़का है। रवि बहुत गरीब तथा नेक और ईमानदार लड़का है। वह हमेशा अनिकेत का अच्छा सोचता है तथा वह उसे अपने भाई की तरह प्यार करता है तथा उसे हमेशा सुधारने का प्रयत्न करता है। अचानक बहुत दिनों बाद अनिकेत उसके घर आता है। अब आगे देखिये क्या होगा?

अनिकेत- रवि, रवि क्या कर रहा है?

रवि- अनिकेत आज अचानक तू कहाँ से आ रहा है?

अनिकेत- आज मेरे पापा ने एक नई बाइक खरीदी है। चल एक बार चलाकर देखते हैं।

रवि- नहीं। तुझे पता है, अट्ठारह साल से कम उम्र के व्यक्ति को कोई भी वाहन चलाने का अधिकार नहीं है।

अनिकेत- छोड़ इन अधिकारों को क्या धरा है इनमें आजकल बाइक चलाना कोई बड़ी बात नहीं है।

रवि- मैं चलने को तैयार हूँ लेकिन अपने पीछे वाले खेत में चलाएंगे बाहर नहीं जाएंगे।

अनिकेत- ठीक है।

रवि- हेलमेट ले आ।

अनिकेत- छोड़ न हेलमेट को क्या हेलमेट की रट लगा रखी है। लगता इतना समझने के बाद भी तेरे दिमाग में कूड़ा भरा है।

[अनिकेत ज़बरदस्ती रवि को बाइक पर बैठाकर ले जाता है। आगे देखिये अब क्या होगा ?]

रवि- इधर मत जा, हाईवे पर बहुत ट्रैफिक है।

अनिकेत- ठीक है थोड़ी आगे से नीचे उतर जाऊँगा। ले अब ठीक है उतर गया नीचे।

रवि- अनिकेत। बाइक धीरे चला तुझे दिख नहीं रहा? लोग ज़ेबरा क्रासिंग से सड़क पार कर रहे हैं।

अनिकेत- अपना मुंह बंद रख नहीं तो नीचे गिरा दूंगा।

रवि- अनिकेत। लालबत्ती पार मत कर। अनिकेत। तुझे दिख नहीं रहा। अभी नहीं बताता तो अभी एक्सीडेंट हो जाता।

अनिकेत- तू चुप रहेगा तो कुछ नहीं होगा ये सारा तेरी वजह से हो रहा है।

[अनिकेत रवि पर झूठा इल्ज़ाम लगाता है लेकिन रवि चुपचाप रहता है।]

PDF Compressor Free Version

भाग - II

[इधर से अनिकेत बाइक से आता है। उधर से राधा की माँ राधा को समझाकर भेजती हैं, आगे देखिये क्या होगा।]

माँ- बेटा लंच पैक कर दिया है। ध्यान से जाना सड़क ध्यान से पार करना सड़क दुर्घटनाएं कम होने का नाम नहीं ले रहीं हैं।

राधा- ठीक है मम्मी, पापा से कह देना लेने ज़रूर आ जायेंगे, मम्मी मैं कॉलेज जाने के लिए लेट हो रही हूँ।

[राधा घर से जल्दी- जल्दी निकल जाती है सड़क पार करते समय अचानक राधा का मोबाइल बजता है।]

राधा- पापा। आप आ गए।

पापा- हाँ, राधा तुम किधर हो?

राधा- पापा, मैं आ रही हूँ।

[इधर राधा जल्दी- जल्दी सड़क पार कर रही होती है तभी अनिकेत की बाइक से राधा की टक्कर हो जाती है।]

रवि- ऐ, क्या एक्सीडेंट हो गया?

अनिकेत- जल्दी भाग, पुलिस आ जाएगी। अबे जल्दी बैठ।

रवि- अनिकेत नहीं। गलती हमारी थी। हमें उसकी सहायता करनी चाहिए। हॉस्पिटल ले जाना चाहिए। उसकी हालत बिगड़ती चली जा रही है। वो दोनों उसे हॉस्पिटल में भर्ती कर देते हैं, डॉक्टर राधा को कुछ दिनों में छुट्टी दे देते हैं। राधा एक बार फिर से ठीक हो जाती है। वो तीनों संकल्प लेते हैं, कभी ट्रैफिक रूल नहीं तोड़ेंगे। हम सबको भी यही कसम खानी होगी। Story by : Bhuvnesh Kumar (VII)

PDF Compressor Free Version

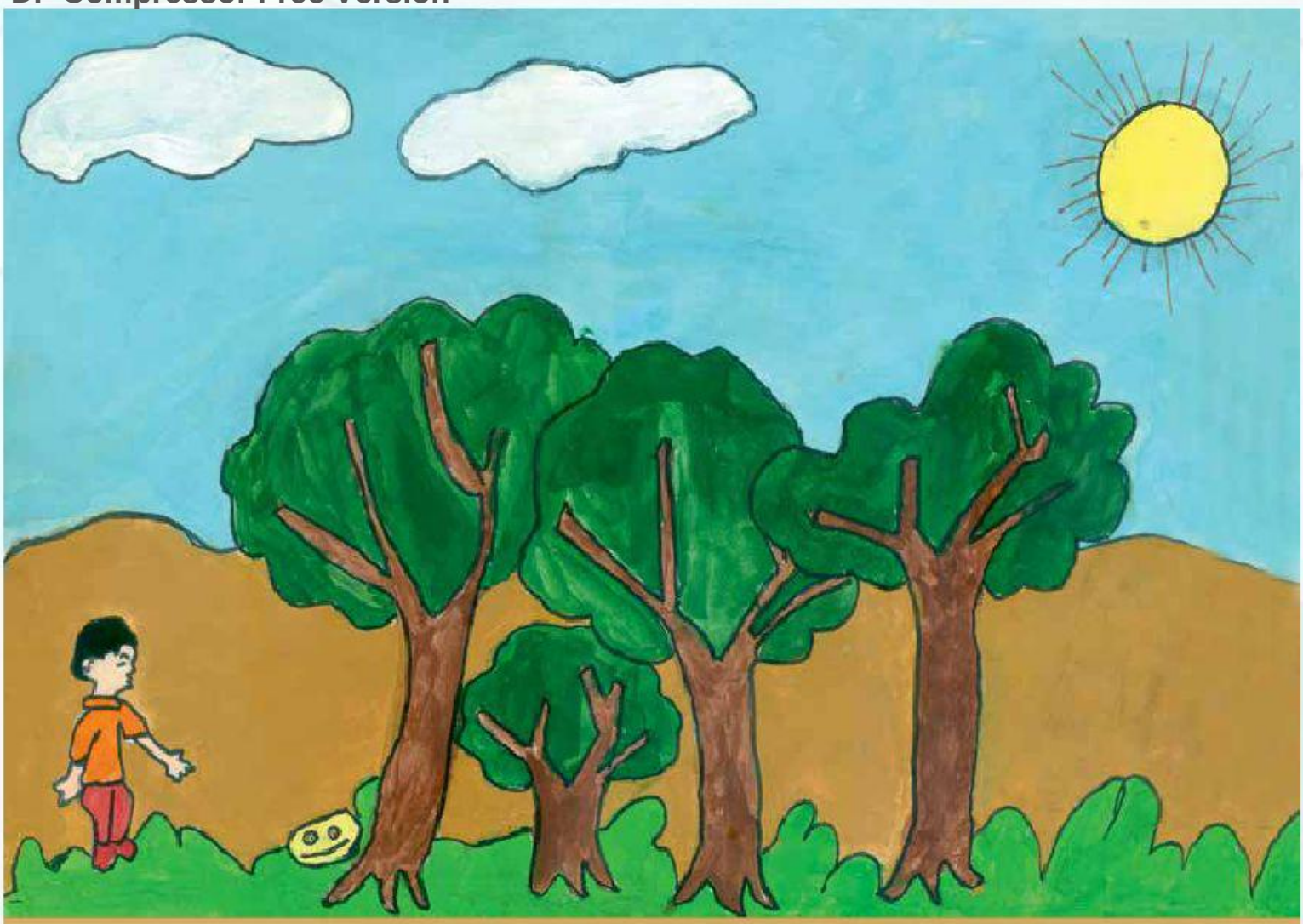

जादुई पत्थर

एक लड़का था उसका नाम मंगल था। एक दिन उसने जंगल जाने की सोची, वह जंगल गया तो उसे एक पत्थर मिला। वह इतना सुन्दर था कि वह उसको घर ले आया। एक दिन वह उस पत्थर को रगड़ रहा था। तो उसमें से एक जिन्न निकला। जिन्न बोला कि मैं तुम्हारी तीन इच्छाएं पूरी कर सकता हूँ। मंगल बोला कि मेरी पहली इच्छा है कि तुम मुझे राजकुमार बना दो। जिन्न ने उसकी इच्छा पूरी कर दी। एक दिन एक राजा ने राजकुमार के राज्य पर चढ़ाई कर दी। वह राजकुमार हारने लगा तो उसने जिन्न को बुलाया और बोला कि मेरी दूसरी इच्छा है कि तुम मुझे इस राजा पर विजय प्राप्त करवा दो। उसने उसकी वह इच्छा भी पूरी कर दी। वह बोला अब मेरी तीसरी इच्छा भी पूरी कर दो जिन्न बोला क्या है? वह बोला कि मेरा पूरा महल सोने का हो जाए। जिन्न ने उसकी वह इच्छा भी पूरी कर दी। अब राजकुमार खुश होकर अपने परिवार के साथ महल में रहने लगा। जिन्न चला गया।

Drawing & Story by : Gyanesh (VI), Luvkush (VI)

PDF Compressor Free Version

राजा और बुढ़िया

एक नगर में एक राजा रहता था। उसका नाम विराट था। अपने नाम के अनुरूप राजा भी दयालु और विशाल हृदय वाला था। प्रत्येक नगर वासी के लिए उसके मन में प्रेम और दया थी। राजा का महल बहुत आलिशान था। महल के चारों तरफ बगीचा था। बगीचे में अनेक रंग-बिरंगे फूल और मीठे फल लगे थे। बगीचा महल की शोभा में चार-चाँद लगाता था। उसी नगर में एक बुढ़िया अपने बच्चों के साथ रहती थी। उसके घर में कमाने वाला कोई नहीं था। एक दिन बुढ़िया के बच्चे भूख से बिलख रहे थे। बुढ़िया से यह देखा नहीं गया और वह राजा के बगीचे में बिना आज्ञा के अंदर चली गई। जब वह पत्थर मारकर फल तोड़ रही थी तो अचानक एक पत्थर महल के बाहर घूमते हुए राजा के सर पर जा लगा। पत्थर लगते ही राजा आग बबूला हो उठा और सैनिकों को आदेश दिया कि जिसने भी यह त्रुटि की है उसे राजा के सामने पेश किया जाए। आदेश मिलते ही सैनिक बगीचे की तरफ दौड़े। उन्होंने देखा कि एक बुढ़िया पत्थर मारकर फल तोड़ रही है। सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और राजा के समक्ष पेश किया। राजा ने बुढ़िया से पूछा कि बिना आज्ञा लिए उसने बगीचे के फल क्यों तोड़े? बुढ़िया हाथ जोड़कर बोली, "महाराज मेरे बच्चों ने पिछले दो दिन से कुछ नहीं खाया। इसीलिए मैंने आपके बगीचे से कुछ फल तोड़ने की हिमाकत की। जब मैं पत्थर मारकर फल तोड़ रही थी तो गलती से पत्थर आपको लग गया। मुझे माफ़ कर दो।" अपने बच्चों के प्रति इस प्रेम को देखकर राजा को बुढ़िया पर दया आ गई और उसने प्रसन्न होकर उस बुढ़िया को माफ़ कर दिया। साथ ही उसने अन्न, चावल, दाल और थोड़े फल देकर सैनिकों के साथ वापिस घर भेज दिया। बुढ़िया राजा के दयालु स्वभाव को देखकर खुश हुई और नम आँखों से आशीर्वाद दिया।

Story by : Sagar (VII), Stuti (VII), Rohit (VII) & Sanjay (VIII)

पक्की दोस्ती

एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। मगर हाथी और लोमड़ी पक्के दोस्त थे। जंगल में उनकी दोस्ती बहुत मशहूर थी। एक दिन किसी बात पर दोनों में बहस हो गई। अब दोनों ने एक-दूसरे से बात करना बंद कर दिया। जब इस बात का पता लोमड़ी के दुश्मनों को चला तो वे बहुत खुश हुए। उन्होंने सोचा कि हम लोमड़ी के खिलाफ हाथी को भड़काएंगे। वे हाथी के घर की ओर चल पड़े। उन्होंने हाथी को लोमड़ी के बारे में झूठी-झूठी गलत बाते बताई। हाथी ने सोचा कि मेरे और लोमड़ी के बीच झगड़ा हुआ है परन्तु लोमड़ी ऐसा काम नहीं कर सकती। मुझे लोमड़ी पर विश्वास है। हाथी ने उन्हें पीटा और भगा दिया। जब यह बात लोमड़ी को पता चली तो वह बहुत खुश हुई। उसने हाथी से जाकर क्षमा मांगी और उस पर विश्वास करने के लिए हाथी का धन्यवाद किया। दोनों में फिर से दोस्ती हो गई।

Story by : Ajay Raj (V)

PDF Compressor Free Version

नया मित्र

राजू नाम का एक लड़का स्कूल में पढ़ता था। उसका स्वभाव अच्छा नहीं था। वह सबसे लड़ता रहता और गाली-गलौच करता। इसलिए कोई भी उससे बात करना पसंद नहीं करता था। एक बार राजू की मम्मी किसी कारण से दिल्ली चली गई। पीछे राजू अकेला रह गया। उसे खाना भी बनाना नहीं आता था। अगले दिन राजू स्कूल गया लेकिन उसके पास खाना नहीं था। दोपहर के भोजन के समय सभी बच्चे अपना-अपना खाना खा रहे थे किन्तु राजू चुपचाप अकेला एक कोने में बैठा था। राजू की मैडम राजू से पूछती है कि तुम खाना क्यों नहीं खा रहे हो? तब राजू ने बताया कि उसकी मम्मी किसी ज़रूरी काम से दिल्ली गई हैं इसलिए वह खाना नहीं ला पाया। मैडम कहती है कि दूसरे बच्चों के साथ मिलकर खा लो। किन्तु कोई बच्चा उसको अपने पास नहीं बुलाता और न ही अपना खाना देता है। तभी कक्षा का एक बच्चा सागर उठकर राजू के पास आता है और कहता है कि राजू ये सब तुम्हारे बुरे व्यवहार के कारण हो रहा है यदि तुम सबके साथ अच्छा व्यवहार करोगे तो सब तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे। राजू को समझ आ गया कि बुरे व्यवहार से कुछ हासिल नहीं होता बल्कि अच्छे व्यवहार से सबका दिल जीता जा सकता है। दो दिन बाद राजू कि मम्मी घर लौटती है तो वह राजू के व्यवहार में बदलाव देखकर कारण पूछती है। राजू अपनी मम्मी को सब कुछ बता देता है। मम्मी राजू को प्यार से गले लगा लेती है।

Story by : Vijay Raj (V)

मैं बरगद

मैं वर्षों से यहाँ खड़ा हूँ। मेरे सामने कई पीढ़ियाँ गुज़र गईं तथा कई नई पीढ़ियों ने मेरे सामने जन्म लिया। लेकिन अब मैं बूढ़ा हो चुका हूँ। मेरी शाखाओं से निकली विशालकाय जड़ें ज़मीन को छूने लगी हैं। मैं समसपुर गांव का रखवाला बूढ़ा बरगद हूँ। मेरी छांव में बूढ़े व बच्चे बैठना पसंद करते हैं। मेरे गाँव के बच्चे स्कूल से आते समय कड़कती धूप से बचने के लिए मेरी आरामदायक छाँव में बैठते हैं। मुझे याद है एक लड़का स्कूल से आते समय मेरी छाँव में ज़रूर बैठता था। लेकिन वह आज पढ़ लिखकर कलेक्टर बन गया है। जब भी वह गाँव में आता है एक बार मुझे देखने अवश्य आता है। वह मेरी कहानियाँ लोगों को सुनाता रहता है। जब मेरी छाँव में नन्हें-नन्हें प्यारे बच्चे किलोलियाँ करते हैं तो मेरा मन प्रफुल्लित हो उठता है। मुझे छोटे-छोटे बच्चें बहुत पसंद हैं। मैं हमेशा प्यारे -प्यारे बच्चों की बाट देखता रहता हूँ। जब भी किसी के आने की आहट सुनाई देती है तो मैं इस आशा से ताकने लगता हूँ कि मेरे प्यारे-प्यारे बच्चे आ गए। अगर उनकी जगह कोई राहगीर निकलता है तो मैं अत्यन्त निराश हो जाता हूँ और सोचने लगता हूँ कि बच्चे कब आएंगे।

अचानक एक दिन कुछ लोग आए और मेरे साथियों को काटने लगे। लगभग २ घंटे पश्चात वो उनको ट्रक में भरकर चले गए। मैं रोता रहा मेरी किसी ने नहीं सुनी। कुछ दिन बाद वो फिर आए अबकी बार उनकी मंशा मुझे नुकसान पहुँचाने की थी लेकिन मेरे बच्चों ने उन्हें देख लिया था। उन्होंने यह खबर गाँव में आग कि तरह फैला दी। गाँव वाले मेरी सहायता के लिए दौड़े चले आए और उनके विरुद्ध लोगों ने क़ानूनी कार्यवाही की तब से लेकर आज तक मैं सुरक्षित हूँ।

Story by : Bhuvnesh (VII)

PDF Compressor Free Version

हाथी की मदद

एक जंगल था उसमें बहुत सारे जानवर रहते थे। जैसे शेर, हाथी, खरगोश, गेंडा, हिरन, लोमड़ी, लंगूर आदि। वे सारे मिल-जुलकर रहते थे। एक दिन हिरन खुश होकर अपने दोस्तों के पास पहुँचा और बोला- "अरे आज कितना ख़ुशी का दिन है।" लोमड़ी बोली- "चलो हाथी के घर चलते हैं वहाँ जाकर दावत करेंगे।" सब बोले- "हाँ-हाँ चलो।" सारे जानवर झूमते गाते हाथी के घर पहुँचे। वहाँ हाथी दुखी होकर मुँह लटकाये बैठा था। लोमड़ी बोली- "हाथी दादा क्या हुआ, इतने उदास क्यों हो?" हाथी बोला- "मेरा भाई मगु जाने कहाँ गायब हो गया है? काफी देर से घर नही पहुँचा है।" सभी ने हाथी का हौसला बढ़ाया और कहा कि निराश न हो। हम सब मिलकर तुम्हारे भाई को ढूंढेंगे। सभी मगु हाथी को ढूंढने निकल पड़ते हैं। तभी खरगोश ने देखा कि मगु हाथी गड्ढे में गिरा पड़ा है तथा निकलने की कोशिश कर रहा है। लोमड़ी को तरकीब सूझी उसने लंगूर से कहा कि तुम अपनी पूँछ गड्ढे में लटका दो। लंगूर ने अपनी पूँछ गड्ढे में लटका दी और हाथी पूँछ पकड़ कर बाहर आ गया। सभी बहुत खुश हुए। मगु ने लंगूर को धन्यवाद दिया और गले लगा लिया।

Collage by : Manisha (VI)
Story by : Stuti (VII), Sujeet (VII) & Deepak (VII)

PDF Compressor Free Version

मगरमच्छ का सबक

एक बार एक हंस आसमान में उड़ रहा था। वह बहुत थक गया था उसे बहुत प्यास लगी थी। पानी की तलाश में वो इधर-उधर भटकने लगा। अचानक कुछ दूरी पर उसे एक तालाब नज़र आया। वह पानी पीने के लिए तालाब के किनारे उतर गया। जब वह पानी पीने लगा तभी एक मगरमच्छ तालाब से बाहर आया और बोला, "कौन हो तुम? यहाँ क्या कर रहे हो?" हंस ने कहा, "मगर भाई मैं हंस हूँ। मुझे प्यास लगी थी इसलिए यहाँ पानी पीने आ गया। यह बात जानकर मगर को गुस्सा आया। उसने कहा, "यह मेरा इलाका है। यहाँ तुम पानी नहीं पी सकते। जाओ यहाँ से।" हंस यह सब सुनकर वहां से उड़ गया। उसने कहीं और से अपनी प्यास बुझाई। कुछ समय बीतने के बाद गर्मियों के दिन आए सूरज तेज़ चमक रहा था। गर्मी से सभी प्राणी त्राहि-त्राहि कर रहे थे। एक दिन हंस आकाश में विचरण कर रहा था। तभी उसकी नजर उस मगरमच्छ पर पड़ी। जिससे वह पहले मिला था। हंस ने नीचे उतर कर देखा तो तालाब का पानी सूख चुका था। मगरमच्छ भूखा-प्यास अकेला पड़ा हुआ था। हंस को उस पर दया आ गई। हंस ने दूसरे तालाबों से मछलियाँ लाकर मगरमच्छ को खिलाई तथा उसे पानी पिलाया। हंस की मदद से मगरमच्छ में जान आ गई। हंस का ऐसा बर्ताव देखकर मगरमच्छ शर्मिंदा हो गया। वह हंस से नज़रे चुराने लगा, परन्तु हंस ने मगरमच्छ से कहा, "तुम्हें शर्मिंदा होने की कोई ज़रूरत नहीं है। एक जीव ही दुसरे जीव के काम आता है। हम एक दूसरे की मदद नहीं करेंगे तो कौन करेगा। मगरमच्छ ने हंस से माफ़ी मांगी और कहा, "हंस भाई मैंने अपने जीवन में सदा बुरा काम किया है परन्तु आज तुम्हारी अच्छाई को देखकर मुझे सबक मिल गया कि बुरा काम करना तो बहुत आसान है लेकिन अच्छा काम करना तथा दूसरे के प्रति मन में अच्छी भावना रखना हर किसी के बस की बात नहीं है। अब वे दोनों पक्के दोस्त बन गए। असहायों की मदद करने लगे। कुछ समय बाद बरसात का मौसम आ गया। तालाब फिर पानी से भर गया। अब मगरमच्छ बहुत खुश था।

Story by : Neha (V)

सर्दी बड़ी सुहानी

सर्दी नवम्बर से फरवरी तक होती है। सर्दी के मौसम में सूरज दादा सभी लोगों को गरमाहट देता है। गरम चीज़े खाने का मन करता है। सर्दी के मौसम में मेरा पालतू खरगोश ज़्यादा इधर-उधर नहीं उछलता है। कभी-कभी तो वो मेरी रज़ाई में ही सो जाता है। मेरी माँ ने मेरे खरगोश के लिए एक ऊन की टोपी बनाई है। टोपी में मेरा खरगोश बहुत सुन्दर लगता है। सर्दी में मेरी माँ शक्कर वाला गर्म दूध बनाकर हम दोनों को देती हैं। सर्दी में हमे मूंगफली, रेवड़ी खाना बहुत पसंद है। सर्दी में आग के पास हमारा सारा परिवार बैठकर सर्दी के मज़े लेता है।

Story by : Vishal Kumar (IV)

PDF Compressor Free Version

पतंग

उस दिन पतंग उड़ाने का दिन था। मैं अपने भाई बहन के साथ सुबह से ही छत पर पहुँच गया। मेरे दोस्त सूरज और कमल भी अपनी छत पर पतंग उड़ाने के लिए पहुँचे थे। आसमान में बहुत सारी पतंग उड़ रहीं थीं। तभी कमल की पतंग कट गई और दूसरे की छत पर जा गिरी। हमने उसे एक और पतंग दी। सब दोबारा पतंग उड़ाने लगे हमने पूरे दिन पतंग उड़ाई और बहुत मज़ा किया शाम को जब पापा घर आए तो मैंने उनसे और पैसे लिए और बाज़ार से बहुत से रंगों वाली पतंग ले आया।

Collage by : Suraj (III) & Dheeraj (III)
Story by : Kamal (III)

PDF Compressor Free Version

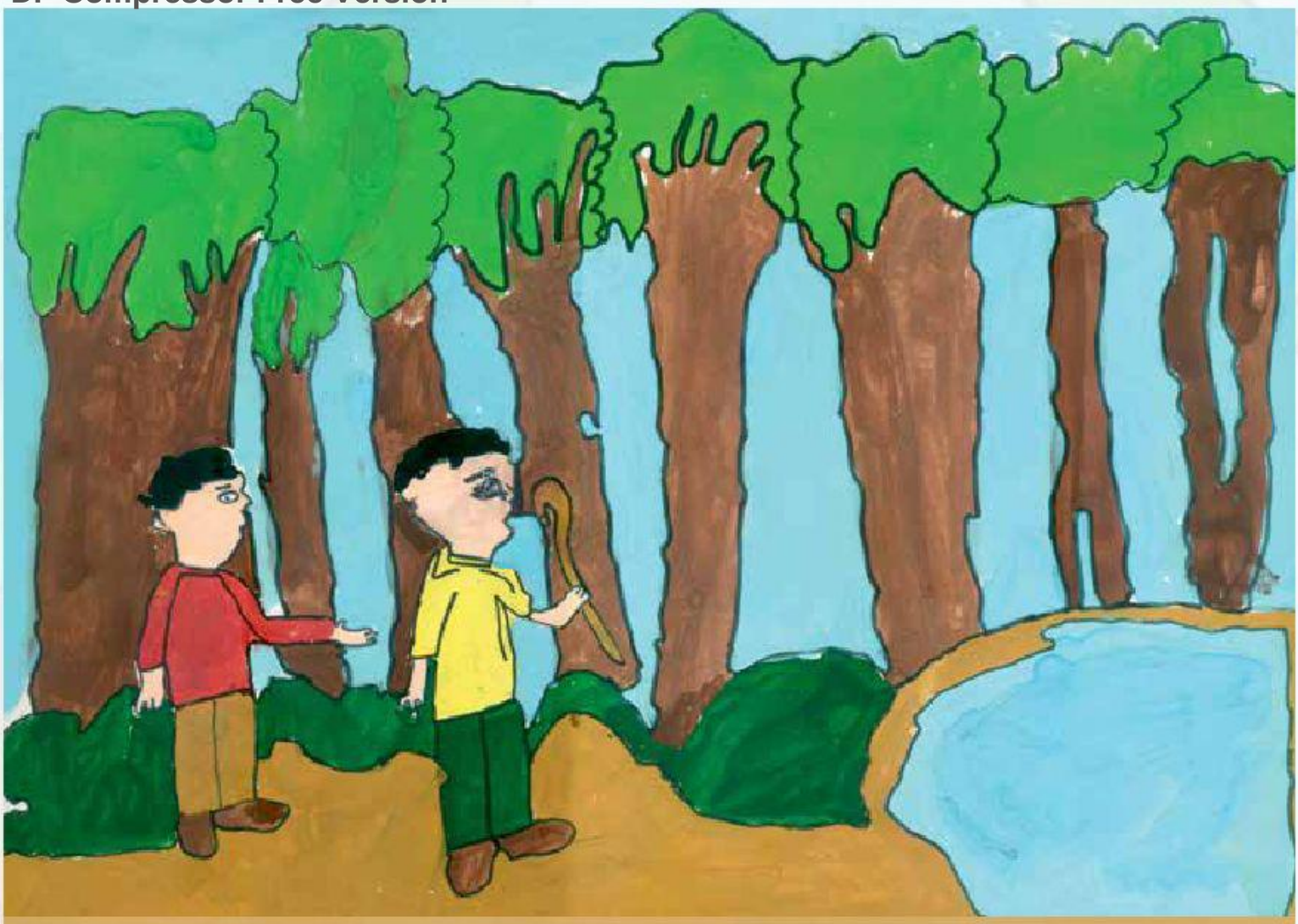

दो जिगरी दोस्त

बहुत समय की बात है, एक गाँव में दो मित्र रहते थे। एक का नाम राजू और दूसरे का मोहन था। वे दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे। वे हमेशा एक साथ ही बैठते, खेलते और खाना भी खाते थे। एक दिन राजू के पापा का तबादला बिहार में हो गया था। राजू और मोहन अलग हो गए। राजू ने कहा, "मोहन हमारी दोस्ती कभी नही टूटेगी। दस साल बाद, मोहन बड़ा हो गया था, मोहन अपने जिगरी दोस्त से मिलने बिहार चला गया था। राजू ने मोहन को नहीं पहचाना। मोहन ने कहा, "राजू तुम मुझे क्यों नहीं पहचान पाए।" राजू ने कहा- "मैं तुम्हारी बात पर कैसे विश्वास करूँ" मोहन ने राजू को कहा- "हम दोनों छोटे से ही अलग हो गए थे क्योंकि तुम्हारे पापा का तबादला हो गया था।" राजू को विश्वास हो गया था कि मोहन मेरा दोस्त है। राजू और मोहन बचपन कि तरह मेला देखने गए, एक साथ खेलने लगे दोनों मित्र बचपन कि बातों में खो गए।

Drawing by : Ajay Raj (V)
Story by : Ravi (VIII) & Sagar (VII)

PDF Compressor Free Version

मेरे गाँव की चिड़ियाँ

मेरे गाँव में रोज़ रंग-बिरंगी चिड़ियाँ आती हैं। वे लाल, पीली, हरी, नीली और भूरे रंग की होती हैं। वे दाने चुगती हैं और जब मैं उनके पास जाता हूँ, तो वे उड़ जाती हैं और वो जब भी आती हैं तो मेरे नानाजी उन्हें दाना देते हैं। और मैं उनकी मदद करता हूँ। एक दिन गुड़गाँव के कन्हई गाँव में भी चिड़ियाँ आई थीं। तो मैंने अपने भाई को बोला कि देख हिमांशु जैसे दुमका गाँव में चिड़ियाँ आती थीं वैसी चिड़ियाँ यहाँ भी आई हैं। इनके सिर पर कलगी भी है। यहाँ मोर भी आते हैं। मुझे आज भी अपने गाँव का वो दिन याद आता है जब मैंने अपने गाँव में रंग-बिरंगी चिड़ियाँ देखी थीं।

Collage by : Lakhan (VII) & Himanshu (VII)
Story by : Priyanshu (IV)

PDF Compressor Free Version

बारिश

ज़ोर से बारिश हुई। लीमा और अलमीन झूला झूलने के लिए पार्क में गए। उन्होंने देखा कि तितली और बिल्ली को भी बारिश अच्छी लगती है। दोनों खुश होकर खेल रहे हैं। गाड़ी से लोग अपने-अपने घर जा रहें हैं।

Drawing by : Almin (Nursery)

Drawing by : Karan (Nursery)

बाजा

यह एक बाजा है। इस बाजे को बजाते हैं। इस बाजे को मैंने टी.वी. पर देखा था। मैं चाहता हूँ कि काश यह बाजा मुझे मिल जाए।

गणतंत्र दिवस

हमने २६ जनवरी को अपने स्कूल में गणतंत्र दिवस मनाया। उस दिन हमारे स्कूल में बच्चों ने गाना गाया। मैंने भी एक गाना गाया। नृत्य का प्रोग्राम भी हुआ था। हमने भी प्रोग्राम में हिस्सा लिया व नृत्य किया। हमारे स्कूल की मुख्याध्यापिका ने झंडा फहराया। हम सब बच्चों ने राष्ट्रगान भी गाया और भारतमाता की जय के नारे लगाये। अन्त में हमें चॉकलेट भी दी गई। सच में बड़ा मज़ा आया।

Drawing by : Khushboo Jahan (I)

PDF Compressor Free Version

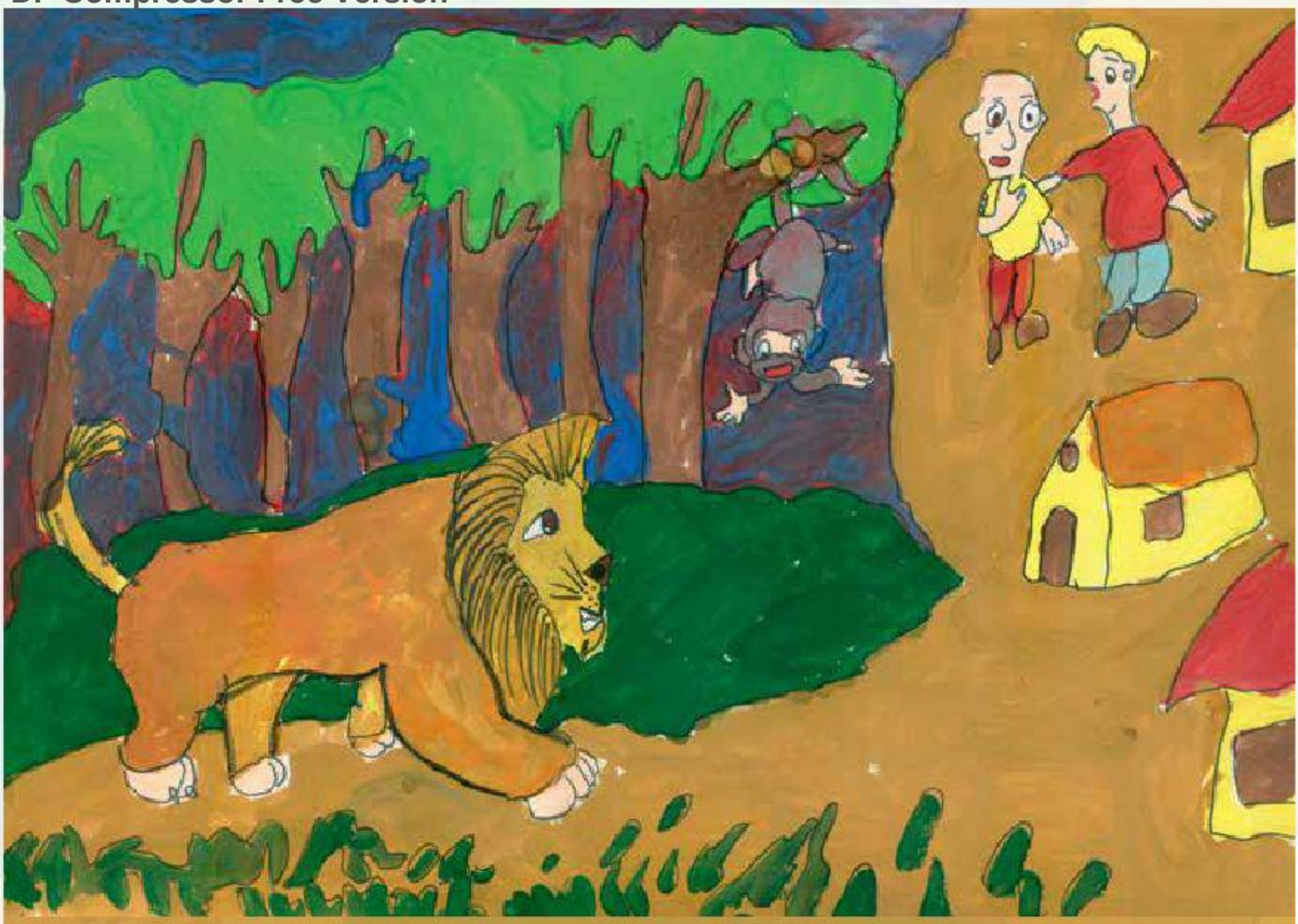

दयालु शेर

एक जंगल में एक शेर रहता था। सारे जंगली-जीव उससे डरते थे क्योंकि वह बहुत शक्तिशाली था। एक दिन शेर जंगल में शिकार की तलाश में घूम रहा था। घूमते-घूमते शेर जंगल के बाहर आ गया था। जंगल के बाहर एक छोटा गाँव था। गाँव के सभी लोग अपने-अपने काम में व्यस्त थे। शेर एक घर के अंदर गया। घर के अंदर एक छोटा-सा बच्चा सो रहा था। शेर बहुत भूखा था। जब शेर की खबर लोगों तक पहुँची तो सारे लोग अपना सारा काम छोड़कर उस घर की तरफ दौड़े गए। शेर घबराकर उस बच्चे को अपने साथ ले गया। गाँव के लोग बहुत गुस्से में थे। उनका मन यह कर रहा था कि वह शेर को जान से मार दे। तभी गाँव के लोग अपने सारे हथियार लेकर जंगल में चले गए। अब सारे लोग जंगल में पहुँच चुके थे। शेर को बहुत डर लग रहा था। फिर शेर अपनी गुफा से निकलकर बच्चे को साथ लेकर गाँव वालों के पास गया और उन्हें वो बच्चा वापस कर दिया। गाँव वालों ने शेर को माफ़ कर दिया और शेर अपने जंगल वापस चला गया।

Drawing & Story by : Sagar (VII), Ravi (VIII)

PDF Compressor Free Version

Drawing by : Tanya (I)
Poem by : Ritesh (I)

तिरंगा झंडा

झंडा है, तिरंगा हमारा,
सबसे प्यारा, सबसे न्यारा।

इसके रंग है, सुन्दर-सुन्दर,
बीच में चक्र प्यारा।

झंडा है, तिरंगा हमारा,
सबसे प्यारा, सबसे न्यारा।

इसकी शान है निराली,
देश में फैले हरियाली।

झंडा है, तिरंगा हमारा,
सबसे प्यारा, सबसे न्यारा।

नीली रेल चली

नीली-नीली रेल चली,
छुक-छुक करती रेल चली।
न्यारे-न्यारे साथी हमारे,
सबको लेकर साथ चली।
कोई दिल्ली से कोई पटना से,
सबको लेकर साथ चली।
नीली-नीली रेल चली,
छुक-छुक करती रेल चली।

Drawing & Poem by : Jeet (I)

PDF Compressor Free Version

Communication Through Arts

Vishwas organised a Communication Arts Course. The purpose of this course was to introduce the fundamentals of formal and informal communication. The content included, but not limited to, forms of oral communication, interpersonal communication skill development, techniques of group discussion, basic techniques of public speaking, orientation to media arts and creative expression.

The course was designed on the basis that children are diverse learners and express differently through various mediums beyond the written text and spoken words. For many, a picture is indeed worth a thousand words. The visual and media art offers the means for helping students to understand and consolidate what they learn. Through the Course Curriculum, Children learnt to express and create something positive out of their lives.

The process encouraged and helped the students to recognize new skills in themselves and others. It helped in building collaboration among both students and teachers. The students gained self-confidence and self-esteem by expressing and exploring their identities, through alternative mediums of expression.

There were activities to develop interpersonal skill. The activities worked as icebreakers to unravel one's self before her or his peers. They shared their personal detail, their likes and dislikes through visual representations with others. Storytelling, asking questions were also part of such activities. The students expressed their understanding of road environment through posters and participated in a poster making competition organized by PVR Nest in which they got selected as the Top 20 schools which demonstrated exceptional understanding and creative expression in context to road safety amongst 200 schools of Delhi NCR.

PDF Compressor Free Version

Open Sharing

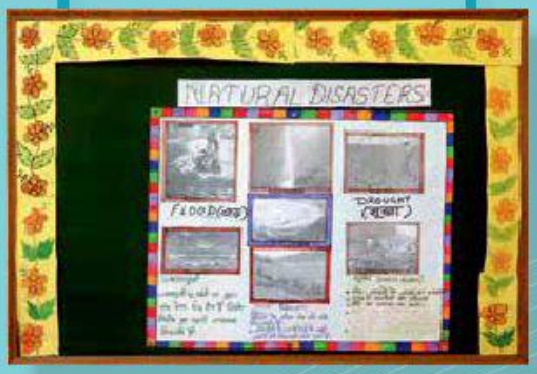

PDF Compressor Free Version

Road Safety

PDF Compressor Free Version

Road Safety

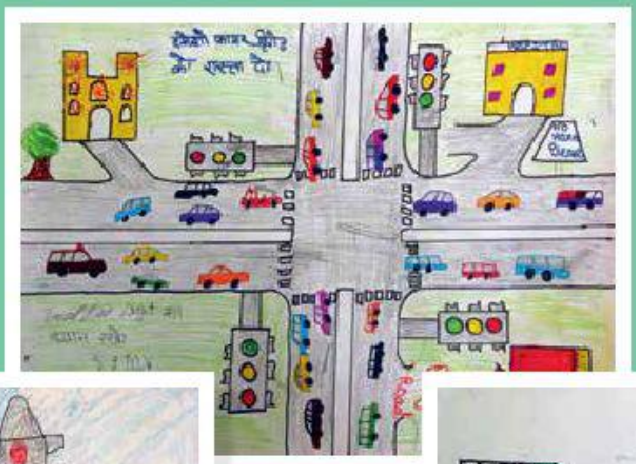

PDF Compressor Free Version

Building Imagination

Left to Right (1) : Gitesh (V), Anjali Rajak (VII) & Ragini Rajak (VI)
Left to Right (2) : Rohit (VI), Krishna Kumar (VI), & Amit Kumar (VI)
Left to Right (3) : Manisha, Varsha (VI) & Rahul, Sahebjaan (VI)
Left to Right (4) : Himanshu Tanwer (VII)

PDF Compressor Free Version

Creative Vision

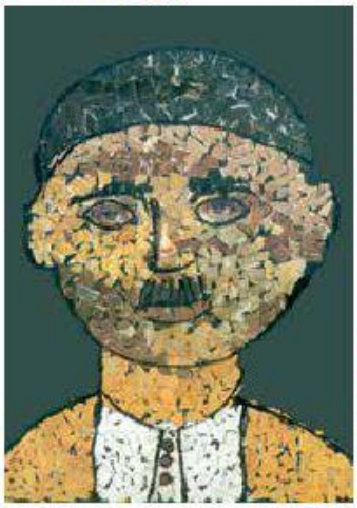

PDF Compressor Free Version

Pictorial Messages

PDF Compressor Free Version

Pictorial Messages

PDF Compressor Free Version

Building Imagination

PDF Compressor Free Version

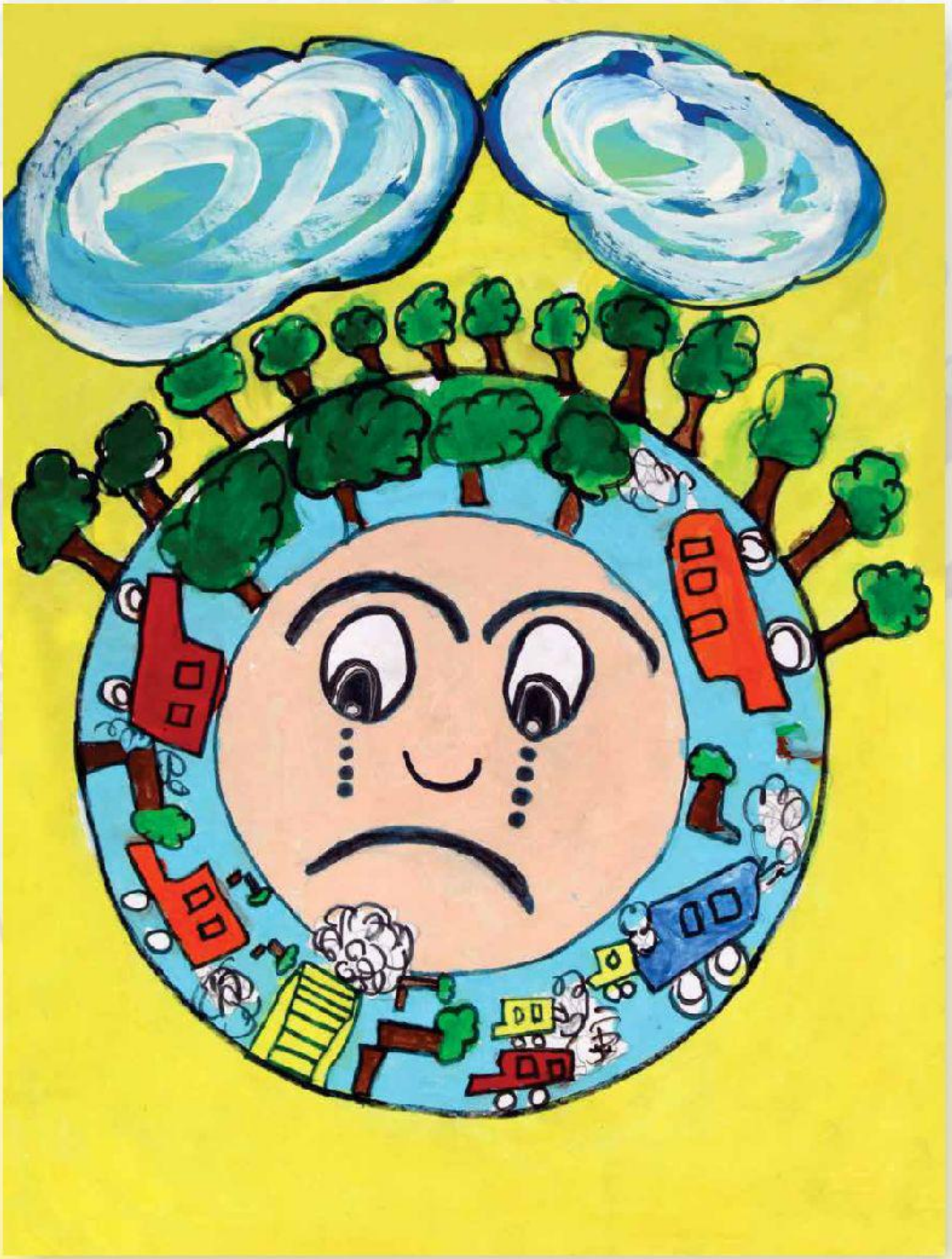

Drawing by : Sanjeev (VII)

PDF Compressor Free Version

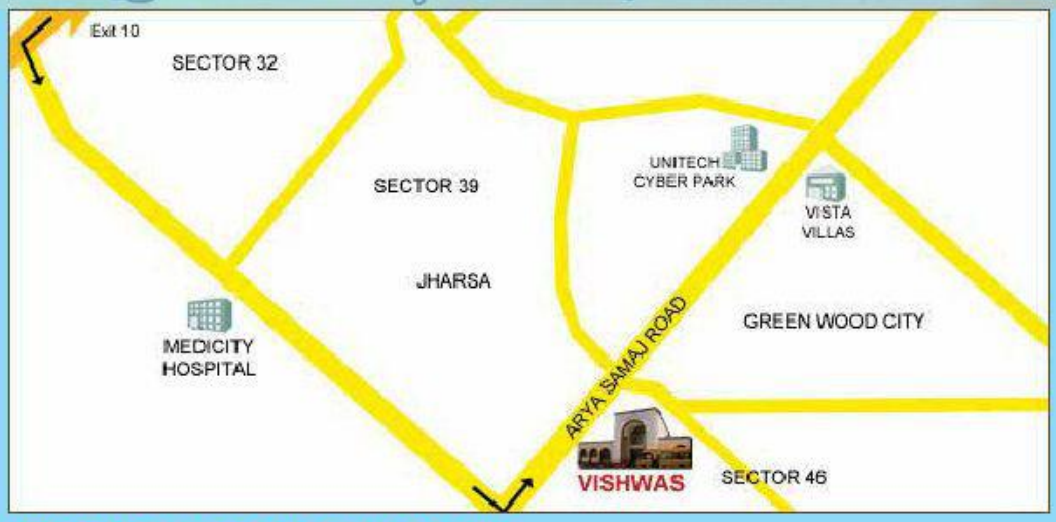

Road map to reach Vishwas Vidyalaya

विश्वास
vishwas
Vision for Health Welfare and Special Needs

Sector-46, Arya Samaj Road,
Near Unitech Cyber Park, Gurgaon-122002
Email: vishwas.nj@gmail.com
Phone: +91-124-2580323

Print Courtesy - EIH Ltd - Unit : Printing Press